राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड,
जयपुर द्वारा आयोजित

AKSHANSH PUBLICATION

CET
स्नातक स्तर

भारत का इतिहास

भारत का भूगोल

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था

भारत की अर्थव्यवस्था

जन स्वास्थ्य

VOLUME 14

1 जुलाई 2026 को जारी नवीनतम परीक्षा पैटर्न पर आधारित

अभिकथन-कारण, युग्म, सुमेलित, सत्य- असत्य प्रश्नों के पैटर्न पर

सारगर्भित प्रश्नोत्तरों का संकलन

THEORY+ MCQ+PYQ

एक ही पुस्तक में

राहुल सर | नागवेन्द्र सर | SK सर | रतन सर | पंकज सर | इरफान सर (RAS)

अक्षांश पब्लिकेशन
M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

AKSHANSH PUBLICATION

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

CET

स्नातक स्तर

भारत का इतिहास
भारत का भूगोल
भारतीय राजनीतिक व्यवस्था
भारत की अर्थव्यवस्था
जन स्वास्थ्य

THEORY+ MCQ+PYQ

VOLUME 14

"अक्षांश प्रकाशन की समस्त पुस्तकें लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर के अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं अक्षांश प्रकाशन की समर्पित टीम के सहयोग से तैयार की गई हैं।"

संपादक
राहुल सर, नागवेन्द्र सर, SK सर
रतन सर, पंकज सर, इरफान सर (RAS)

सह संपादक
गंगासिंह, अनोपचंद मंडा
प्रकाश भाटी,सुमेर प्रजापत, पप्पाराम सोलंकी

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

नोट :- अब लक्ष्य क्लासेज़ की सभी आगामी पुस्तकें केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के माध्यम से ही प्रकाशित की जाएंगी। ये सभी पुस्तकें बाजार में 'अक्षांश' नाम से ही उपलब्ध होंगी। विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आगामी समय में 'लक्ष्य' नाम से कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं की जाएगी। इसलिए कृपया पुस्तक खरीदते समय केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के नाम से प्रकाशित और अधिकृत पुस्तकें ही बुक स्टोर्स से प्राप्त करें, ताकि आपको प्रमाणिक, अद्यतन एवं परीक्षा-उपयुक्त सामग्री प्राप्त हो।भविष्य में 'लक्ष्य' नाम से प्रकाशित किसी भी पुस्तक की सामग्री या गुणवत्ता की जिम्मेदारी 'अक्षांश प्रकाशन' या 'लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर' की नहीं होगी।

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करे

TELEGRAM INSTAGRAM YOUTUBE FACEBOOK WHATSAPP

बुक कोड - AP0134

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन
lakshyaclassesudr@gmail.com

मुख्य वितरक - लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
M. 9079798005, 6376491126

इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियाँ, तथ्य और सूचनाएँ सावधानीपूर्वक सत्यापित की गई हैं। फिर भी यदि किसी जानकारी या तथ्य में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए प्रकाशक, संपादक या मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे।

हमारा विश्वास है कि इस पुस्तक की सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से तैयार की गई है। यदि किसी प्रकार का कॉपीराइट उल्लंघन सामने आता है, तो उसकी जिम्मेदारी प्रकाशक की नहीं होगी।

सभी विवादों के निपटारे के लिए न्यायिक क्षेत्र उदयपुर रहेगा।

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

01 भारतीय इतिहास

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	सिंधु घाटी सभ्यता	1 – 6
2.	वैदिक सभ्यता	7 – 12
3.	बौद्ध एवं जैन धर्म	13 – 16
4.	दिल्ली सल्तनत	17 – 20
5.	मुगल साम्राज्य	21 – 28
6.	1857 की क्रांति	29 – 31
7.	19वीं एवं 20वीं शताब्दी में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन	32 – 36
8.	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन	37 – 48
9.	स्वतंत्रयोत्तर राष्ट्र निर्माण	49 – 51
10.	राज्यों का पुनर्गठन	52 – 54
11.	नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी विकास	55 – 57
12.	CET स्नातक स्तर विगत वर्ष प्रश्न	58 – 61

02 भारत का भूगोल

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	1 – 3
2.	भौतिक स्वरूप- पर्वत, पठार, मरूस्थल एवं मैदान	4 – 14
3.	जलवायु एवं मानसून तंत्र	15 – 25
4.	प्रमुख नदियाँ, बाँध, झील एवं सागर	26 – 33
5.	वन्य जीव एवं अभयारण्य	34 – 39
6.	प्रमुख फसलें- गेहूं, चावल, कपास, गन्ना, चाय कॉफी	40 – 44
7.	प्रमुख खनिज- लौह अयस्क, मैंगनीज, बॉक्साइड, अभ्रक	45 – 47
8.	ऊर्जा संसाधन- परंपरागत एवं गैर परंपरागत	48 – 54
9.	प्रमुख उद्योग एवं औद्योगिक प्रदेश	55 – 61
10.	राष्ट्रीय राजमार्ग, परिवहन के साधन एवं व्यापार	62 – 74
11.	जनसंख्या- वृद्धि, घनत्व, साक्षरता एवं लिंगानुपात	75 – 81
12.	आपदा प्रबंधन एवं जलवायु परिवर्तन	82 – 91
13.	CET स्नातक स्तर विगत वर्ष प्रश्न	92 – 96

03 भारतीय राजव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भारतीय संविधान की प्रकृति एवं विशेषताएँ	1 –3
2.	संविधान सभा एवं संविधान निर्माण	4 – 7
3.	प्रस्तावना	8 – 10
4.	मौलिक अधिकार	11 – 16
5.	राज्य के नीति निदेशक तत्त्व	17 – 19
6.	मौलिक कर्त्तव्य	20 – 21
7.	संवैधानिक संशोधन	22 – 28
8.	आपातकालीन प्रावधान	29 – 31
9.	जनहित याचिका	32 – 33
10.	राष्ट्रपति	34 – 37
11.	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	38 – 40
12.	संसद	41 – 49
13.	उच्चतम न्यायालय	50 – 53
14.	निर्वाचन आयोग	54 – 55
15.	नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक	56 – 57
16.	वित्त आयोग	58 – 60
17.	लोकपाल	61 – 62
18.	राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग	63 – 64
19.	नीति आयोग	65 – 66
20.	राष्ट्रीय सूचना आयोग	67 – 69
21.	CET स्नातक स्तर विगत वर्ष प्रश्न	70 – 72

04 भारतीय अर्थव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	बजट निर्माण	1 –6
2.	बैंकिंग प्रणाली एवं लोक वित्त	7 – 10
3.	वस्तु एवं सेवा कर	11 – 13
4.	राष्ट्रीय आय, संवृद्धि एवं आर्थिक विकास	14 – 18
5.	राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ	19 – 22
6.	सब्सिडी एवं लोक वितरण प्रणाली	23 – 25
7.	ई-कॉमर्स	26 – 28
8.	अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र - कृषि उद्योग, सेवा क्षेत्र	29 – 45
9.	पंचवर्षीय योजना एवं नियोजन प्रणाली	46 – 52
10.	प्रमुख आर्थिक समस्याएँ, आर्थिक सुधार, उदारीकरण	53 – 56
11.	CET स्नातक स्तर विगत वर्षों के प्रश्न	57 – 60

05 जनस्वास्थ्य

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्राथमिक चिकित्सा की बुनियादी बातें	1 – 6
2.	कार्डयोपल्मोनटी पुनर्जीवन (CPR)	7 – 9
3.	सोशल मीडिया के जोखिम एवं निवारक उपाय	10 – 13
4.	नशीले पदार्थों के दुरुपयोग एवं बचाव के उपाय	14 – 16
5.	युवाओं की शारीरिक एवं मानसिक फिटनेस	17 – 19

❑❑❑❑

भारत का इतिहास

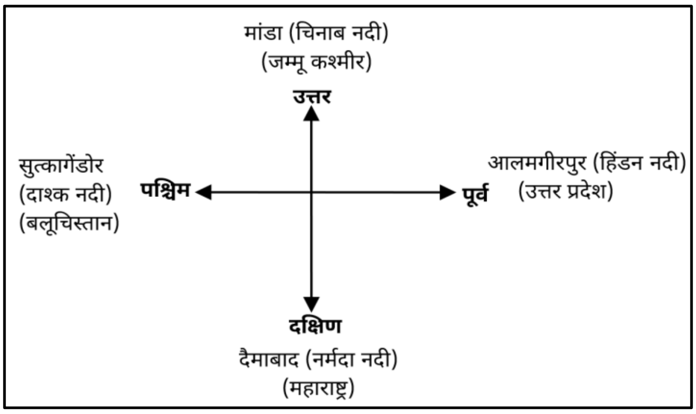

- 20वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में किए गए पुरातात्विक उत्खनन से भारतीय उपमहाद्वीप में फलती-फूलती एक व्यापक सभ्यता का पता चला।
- सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे हड़प्पा संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है, 1921 में पश्चिमी पंजाब, पाकिस्तान के आधुनिक हड़प्पा स्थल पर खोजी गई थी।
- यह सभ्यता पंजाब, हरियाणा, सिंध, बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों तक फैली हुई थी।
- तीन समकालीन सभ्यताओं में - अर्थात्, नील घाटी में **मिस्र की सभ्यता (मिस्र), टिगरिस-फरात घाटी में मेसोपोटामिया सभ्यता** (इराक) और **ह्वांग-हो घाटी में ह्वांग-हो सभ्यता** (चीन) - सिंधु घाटी सभ्यता सबसे बड़ी थी।
- सिंधु घाटी सभ्यता की अधिकांश बस्तियाँ सरस्वती नदी प्रणाली की घाटी में स्थित थीं, जो अब विलुप्त हो चुकी है।
- हड़प्पा **सभ्यता का इतिहास** 2600 और 1900 ईसा पूर्व के बीच माना जाता है और इसका नाम हड़प्पा के नाम पर पड़ा है, जो वह प्रारंभिक स्थल है जहां इस संस्कृति की खोज हुई थी।

हड़प्पा पुरातत्व में प्रमुख विकास

वर्ष	विकास
1875	हड़प्पा मुहर पर अलेक्जेंडर कनिंघम की रिपोर्ट।
1921	माधो स्वरूप वत्स द्वारा हड़प्पा में उत्खननों का आरंभ
1925	मोहनजोदड़ो में उत्खननों का प्रारंभ
1946	आर. ई. एम. व्हीलर द्वारा हड़प्पा में उत्खनन
1955	एस. आर. राव द्वारा लोथल में खुदाई का आरंभ
1960	बी. बी. लाल तथा बी. के. थापर के नेतृत्व में कालीबंगा में उत्खनन का आरंभ
1974	एम. आर. मुगल द्वारा बलूचिस्तान में अन्वेषण का आरंभ
1980	जर्मन–इटालवी संयुक्त दल द्वारा मोहनजोदड़ो में सतह-अन्वेषण का आरंभ
1986	अमेरिकी दल द्वारा हड़प्पा में उत्खननों का आरंभ
1990	आर. एस. बिष्ट द्वारा धौलावीरा में उत्खनन का आरंभ

हड़प्पा संस्कृति के विभिन्न चरण

काल	प्रारंभिक हड़प्पा काल (3500-2600 ईसा पूर्व)	परिपक्व हड़प्पा काल (2600-1900 ईसा पूर्व)	उत्तर हड़प्पा काल (1900 ईसा पूर्व से)
विशेषताएँ	पहाड़ियों और मैदानों में कई और बस्तियाँ स्थापित की गईं।	बड़े शहरों का उदय, एक समान प्रकार की ईंटें, बाट, मुहरें, मनके और मिट्टी के बर्तन।	लेखन और शहरी जीवन त्याग दिया।
	इस अवधि में गांवों की सबसे बड़ी संख्या होती है।	नियोजित टाउनशिप और लंबी दूरी का व्यापार।	हड़प्पा शिल्प और मिट्टी के बर्तनों की परंपरा का जारी रहना।
	तांबे, पहिये और हल का उपयोग।	हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे बड़े शहरी केंद्र पाए जाते हैं।	पंजाब और सतलुज-यमुना की ग्रामीण संस्कृतियां विभाजित हो गईं और गुजरात ने हड़प्पा शिल्प और मिट्टी के बर्तनों की परंपराओं को आत्मसात कर लिया।
	कोट दीजी, आमरी, धोलावीरा, कालीबंगा आदि प्रारंभिक हड़प्पा स्थल थे।	कई हड़प्पा स्थल त्याग दिए गए। अंतर-क्षेत्रीय आदान-प्रदान में गिरावट आई।	मांडा, संघोल, आलमगीरपुर और दौलतपुर कुछ महत्त्वपूर्ण स्थल थे।

हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति पर विभिन्न सिद्धांत

- **अर्नेस्ट जे.एच. मैके ने** यह सिद्धांत प्रस्तावित किया कि "सुमेरियन क्षेत्रों से लोगों के प्रवासन से हड़प्पा सभ्यता का निर्माण हुआ होगा।"
- **सर मॉर्टिमर व्हीलर ने** सुझाव दिया कि "हड़प्पा सभ्यता संभवतः मेसोपोटामिया सभ्यता की अचानक संतान के रूप में उत्पन्न हुई होगी, जिसे जुड़वां नदियों की भूमि के रूप में जाना जाता है।"
- डी.एच. गॉर्डन ने सिद्धांत दिया कि "सिंधु घाटी सभ्यता पश्चिम एशिया से प्रवास के परिणामस्वरूप उभरी।"
- अमलानंद घोष ने यह विचार प्रस्तुत किया कि "कालीबंगा की पूर्व-हड़प्पा संस्कृति, जिसे सोथी संस्कृति के रूप में जाना जाता है, हड़प्पा सभ्यता के रूप में विकसित हुई।"
- **मोहम्मद रफीक मुगल ने** प्रस्तावित किया कि "हड़प्पा सभ्यता पूरी तरह से स्वदेशी थी, लेकिन व्यापक रूप से सुमेरियन और मेसोपोटामिया संस्कृतियों से प्रेरित और प्रभावित थी।"

पुरातत्वविदों द्वारा दी गई उत्पत्ति अवधि	
पुरातत्वविदों	**अनुमानित समय**
जॉन मार्शल	3250-2750 ईसा पूर्व
अर्नेस्ट मैके	2800-2500 ईसा पूर्व
एमएस वत्स	3500-2700 ईसा पूर्व
मोर्टिमर व्हीलर	2500-1500 ईसा पूर्व
डब्ल्यू फेयरसर्विस	2000-1500 ईसा पूर्व
डीपी अग्रवाल	2300-1700 ईसा पूर्व

भौगोलिक विस्तार

- सिंधु या हड़प्पा संस्कृति ताम्रपाषाण संस्कृतियों से पुरानी है, लेकिन यह इन संस्कृतियों की तुलना में कहीं अधिक विकसित है।
- इसका उदय भारतीय उपमहाद्वीप के **उत्तर-पश्चिमी** भाग में हुआ।
- सिंध में कई स्थल पूर्व-हड़प्पा संस्कृति के केन्द्रीय क्षेत्र का निर्माण करते थे। परिपक्व हड़प्पा संस्कृति का मध्य क्षेत्र सिंध और पंजाब में, मुख्यतः सिंधु घाटी में स्थित था । यहाँ से यह दक्षिण और पूर्व की ओर फैला। यह क्षेत्र त्रिभुजाकार है और इसका क्षेत्रफल लगभग 12,99,000 वर्ग किलोमीटर है, तथा उपमहाद्वीप में अब तक लगभग 1500 हड़प्पा स्थल ज्ञात हैं।
- **सर जॉन मार्शल** प्रथम पहले पुरातत्ववेत्ता थे, जिन्होंने इस सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता नाम दिया।

सिंधु घाटी सभ्यता के महत्त्वपूर्ण स्थल

हड़प्पा (पंजाब, पाकिस्तान)

- **1921 में रावी नदी के किनारे खोजा गया हड़प्पा, दया राम साहनी** की देखरेख में सिंधु घाटी सभ्यता का पहला उत्खनन स्थल था । इसी स्थल के नाम पर इस **सभ्यता** का प्रारंभिक नाम **हड़प्पा रखा गया था।**
- हड़प्पा के विशाल टीलों को सबसे पहले 1826 में **चार्ल्स मैसन ने देखा था और बाद में 1853 और 1873 में अलेक्जेंडर कनिंघम** ने उनका दौरा किया था । उल्लेखनीय विशेषताओं में गढ़ के बाहर स्थित छह अन्न भंडार और गढ़ की दीवारों के ठीक नीचे बैरक या एक कमरे वाले क्वार्टरों की पंक्तियाँ शामिल हैं।
- दो अलग-अलग दफनाने की प्रथाओं, आर-37-प्रकार और एच-प्रकार के कब्रिस्तानों की पहचान की गई।
- स्टुअर्ट पिग्गट ने इसे 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा है। यहाँ के निवासियों का एक बड़ा भाग व्यापार, तकनीकी उत्पाद और धर्म के कार्यों में संलग्न था। उन्होंने हड़प्पा व मोहनजोदड़ो को 'एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वाँ राजधानी' कहा था।
- नगर की रक्षा के लिये पश्चिम की ओर एक दुर्ग का निर्माण किया गया था। यह दुर्ग उत्तर से दक्षिण की ओर 415 मीटर लंबा तथा पूर्व से पश्चिम की ओर 195 मीटर चौड़ा है। जिस टीले पर यह दुर्ग बना है उसे व्हीलर ने 'माउंड ए-बी' (Mound A-B) की संज्ञा प्रदान की है।

मोहनजोदड़ो (सिंध, पाकिस्तान)

- **1922 में राखल दास बनर्जी** द्वारा सिंधु नदी पर खोजा गया, मोहनजोदड़ो सबसे बड़े स्थलों में से एक है। सिंधी भाषा में, मोहनजोदड़ो का अर्थ है **"मृतकों का टीला"।**
- उल्लेखनीय संरचनाओं में एक आयताकार, बहु-स्तंभीय सभा भवन और एक विशाल आयताकार भवन शामिल हैं, जो प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए बनाया गया माना जाता है।
- **ग्रेट बाथ**, एक महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल है, जिसमें सतह तक जाने के लिए सीढ़ियाँ और जल निकासी के लिए इनलेट और आउटलेट वाले चेंजिंग रूम हैं। यह स्नानागार 39 फीट लंबा, 23 फीट चौड़ा और 8 फीट गहरा है।
- मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत, ग्रेट **ग्रैनरी**, ईंटों से बनी एक संरचना है जिसका आकार 45 मीटर उत्तर-दक्षिण और 45 मीटर पूर्व-पश्चिम है। इसमें तीन शयन कक्षों वाली दीवारें हैं जिनके बीच हवा की जगह है। मोहनजोदड़ो में पाई गई कलाकृतियां में पशुपति की मुहर, एक नर्तकी की कांस्य प्रतिमा, तीन बेलनाकार मुहरें, एक दाढ़ी वाले व्यक्ति की शैलखटी मूर्ति, मातृदेवी की मिट्टी की आकृतियां, पासे, एक योगी की मूर्ति, एक अन्न भंडार और एक गेंडा शामिल हैं।

चन्हूदड़ो

- यह सैंधव नगर मोहनजोदड़ो से 130 किमी. दक्षिण-पूर्व सिंध प्रांत (पाकिस्तान) में स्थित है। इसकी सर्वप्रथम खोज 1934 ई. में एन. गोपाल मजूमदार ने की थी तथा 1935 ई. में अर्नेस्ट मैके द्वारा यहाँ उत्खनन करवाया गया।
- चन्हूदड़ो एकमात्र पुरास्थल है, जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं।
- चन्हूदड़ो में किसी दुर्ग का अस्तित्व नहीं मिला है। चन्हूदड़ों से पूर्वोत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति (झूकर-झाँगर) के अवशेष मिले हैं।
- ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक औद्योगिक केंद्र था जहाँ मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप के बटखरे बनाने का काम होता था। अर्नेस्ट मैके ने यहाँ से मनका बनाने का कारखाना तथा भट्टी की खोज की है।

लोथल

- यह गुजरात के अहमदाबाद जिले के सरगवाला ग्राम के समीप दक्षिण में भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इसकी खोज सर्वप्रथम डॉ. एस.आर. राव ने 1955 ई. में की थी।
- यह स्थल एक प्रमुख बंदरगाह था, जो पश्चिमी एशिया से व्यापार का प्रमुख स्थल था।लोथल में नगर को दो भागों में न बाँटकर एक ही रक्षा प्राचीर से पूरे नगर को दुर्गीकृत किया गया था।

धोलावीरा (कच्छ जिला, गुजरात, भारत)

- गुजरात के कच्छ जिले के खादिर क्षेत्र में स्थित धोलावीरा, दुनिया के सबसे पुराने साइनबोर्ड, वाबनी **धोलावीरा साइनबोर्ड** की खोज के लिए प्रसिद्ध है, जिसे 1968 में पुरातत्वविद् **जगत पति जोशी ने खोजा था।**
- यह स्थल अपनी उन्नत जल संचयन और प्रबंधन प्रणाली के लिए जाना जाता है, जिसमें कई बांध और परस्पर जुड़े जलाशय शामिल हैं। 2021 में, यूनेस्को ने धोलावीरा को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया।
- धोलावीरा की वास्तुकला मिट्टी-ईंटों के साथ स्थानों में संयुक्त रूप से **बलुआ पत्थर** के बड़े पैमाने पर उपयोग को दर्शाती है।
- एक दिलचस्प विशेषता **महल-बेली** और **मध्य शहर** के बीच एक बड़ा खुला क्षेत्र (जिसे **'स्टेडियम'** कहा जाता है) है, जिसका उपयोग विशेष अनुष्ठानिक अवसरों के लिए किया जा सकता है।
- कब्रिस्तान क्षेत्र में पत्थर की ईंटों के साथ पंक्तिबद्ध आयताकार गड्ढे वाले दफन स्थलों का पता चला है। जलाशयों में उनके पानी को प्रवाहित करने के लिए इन पर **बाँध** बनाए गए थे। गढ़ और निचले शहर में स्थित कई बड़े, गहरे पानी के **कुएँ** और **जलाशय (कम से कम 16)** वर्षा के पानी के कीमती भंडार को संचित करने के लिए बनाए गए थे।

कालीबंगा

- यह राजस्थान के गंगानगर जिले में घग्घर नदी के बायें तट पर है। कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ 'काले रंग की चूड़ियाँ' हैं।
- इसकी खोज 1951 में अमलानंद घोष द्वारा की गई तथा 1961 ई. में बी.बी. लाल और बी.के. थापर के निर्देशन में व्यापक खुदाई की गई।
- यहाँ से जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है।

- यहाँ के भवनों का निर्माण कच्ची ईंटों द्वारा हुआ था; यहाँ से अलंकृत ईंटों के साक्ष्य भी मिले हैं।
- कालीबंगा में शवों के अंत्येष्टि संस्कार हेतु तीन विधियों- पूर्ण समाधीकरण, आशिक समाधीकरण एवं दाह-संस्कार के प्रमाण मिले हैं। एक छोटा पश्चिमी टीला और एक बड़ा पूर्वी टीला है, जिसके बीच में एक खुली जगह है।
- एक छोटा, तीसरा टीला भी है, जिसमें केवल बड़ी संख्या में अग्नि वेदियाँ हैं। घरों में वैयक्तिक अग्नि वेदिकाएँ पाई गई हैं।
- गढ़ परिसर और निचला शहर दोनों किलेबंद थे।
- निचले शहर योजना में एक मोटा समानांतर चतुर्भुज था, जो एक मिट्टी-ईंट की दीवार से घिरा था।

बनावली

- हरियाणा के फतेहाबाद जिले में स्थित इस पुरास्थल की खोज 1973 ई. में आर.एस. बिष्ट ने की थी।
- इस स्थल से कालीबंगा की तरह हड़प्पा-पूर्व और हड़प्पाकालीन दोनों संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ जल निकास प्रणाली का अभाव था।
- यहाँ से मिटटी का बना हल मिला है।
- बनावली से अधिक मात्रा में जो मिला है।

राखीगढ़ी

- हरियाणा के हिसार जिले में स्थित प्रमुख पुरातात्विक स्थल।
- यहाँ से अन्नागार एवं रक्षा प्राचीर के साक्ष्य मिले हैं।
- मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है।

दैमाबाद

- **दैमाबाद,** भारत के महाराष्ट्र राज्य में **गोदावरी नदी** की एक सहायक नदी प्रवरा के **बाएँ तट** पर स्थित एक परित्यक्त बस्ती और सिंधु घाटी सभ्यता का एक पुरातात्विक स्थल है।
- दैमाबाद में मिले अवशेषों के अनुसार, **उत्तर हड़प्पा सभ्यता** भारत के **दक्कन पठार तक फैली** हुई हो सकती है।
- 1958 में **बी.पी. बोपार्डिकर ने** दैमाबाद की स्थापना की।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की टीमें अब तक तीन बार इस स्थल की खुदाई कर चुकी हैं।
- **एम.एन. देशपांडे ने** प्रारंभिक उत्खनन का निर्देशन किया, जो 1958 और 1959 के बीच हुआ।
- **1974-75 में एसआर राव ने** दूसरा उत्खनन किया। **अंततः 1975 से 1978 तक एसए साली ने** उत्खनन का निर्देशन किया।
- दैमाबाद में हुई खोजों के अनुसार, उत्तर **हड़प्पा सभ्यता** संभवतः भारत के दक्कन पठार तक पहुंच गई थी।
- दैमाबाद में कई कांस्य वस्तुएं खोजी गईं, जिनमें से कुछ **हड़प्पा संस्कृति से प्रेरित थीं**

सिंधु घाटी सभ्यता के स्थल

स्थल	जगह	उत्खननकर्ता	उत्खनन का वर्ष	प्रमुख निष्कर्ष
हड़प्पा	मोंटगोमरी, पाकिस्तान, रावी नदी के तट पर	दया राम साहनी	1921	अन्न भंडार, कामगारों का आवास, वैनिटी केस, भट्टियां, सिंधु लिपि में मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े, घनाकार चूना पत्थर का वजन, तांबे की बैलगाड़ी, ताबूत दफन, कब्रिस्तान, टेराकोटा मूर्तियां, सतही स्तर पर घोड़े के साक्ष्य, आदि।
मोहनजोदड़ो	सिंधु नदी के तट पर सिंध का लरकाना जिला	आरडी बनर्जी	1922	विशाल स्नानागार, अन्न भंडार, यूनिकॉर्न मुहरें, कांस्य नृत्य करती लड़की की मूर्ति, पशुपति मुहर, दाढ़ी वाले पुजारी की सेलखड़ी मूर्ति, बुने हुए कपड़े का टुकड़ा, आदि।
सुत्कागेनडोर	दश्त नदी पर बलूचिस्तान	ऑरियल स्टीन	1927	हड़प्पा और बेबीलोन के बीच व्यापार बिंदु, चकमक पत्थर, पत्थर के बर्तन, पत्थर के तीर, शंख के मोती, मिट्टी के बर्तन, घोड़े के अवशेष आदि।
चन्हूदड़ो	मुलन संधा, सिंध, सिंधु नदी पर	एनजी मजूमदार	1931	चूड़ियों का कारखाना, दवात, मोती बनाने वालों की दुकान, बिल्ली का पीछा करते कुत्ते के पैरों के निशान, बैठे हुए चालक वाली गाड़ी, यह एकमात्र शहर है
रंगपुर	काठियावाड़ (गुजरात), मदार नदी पर	एमएस वत्स, एसआर राव	1931, 1953-54	बिना किसी गढ़ आदि के।
अमरी	बलूचिस्तान के निकट, सिंधु नदी के तट पर	फ़ज़ल अहमद	1955	उत्तर-हड़प्पा स्थल। चावल की भूसी, छह प्रकार के मिट्टी के बर्तन, आदि। मृग साक्ष्य, गैंडे के साक्ष्य, आदि।
कोट-दीजी	खैरपुर (सिंध, पाकिस्तान), सिंधु नदी पर	फ़ज़ल अहमद, गुरे	1955	बैल की मूर्ति, सेलखड़ी मुहर, टेराकोटा मोती, आदि।
कालीबंगा	घग्गर नदी के तट पर राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला	अमलानंद घोष	1953	अन्न भंडार, जुता हुआ खेत, लकड़ी की नालियाँ, भूकंप के साक्ष्य, लकड़ी का हल, ऊँट की हड्डी, अग्नि वेदी, मिट्टी की ईंटें आदि।
लोथल	अहमदाबाद, गुजरात, खंभात की खाड़ी के पास भोगवा नदी पर	आर राव	1957	छह खंडों में विभाजित, मनका बनाने का कारखाना, चावल की भूसी, हाथी दांत का वजन संतुलन, गोदी, अग्नि वेदिका, घोड़े की टेराकोटा आकृति, आदि।
रोपड़	पंजाब, सतलुज नदी पर	वाईडी शर्मा	1953	संस्कृति का पांच गुना क्रम, पत्थर और मिट्टी के घर, मानव दफ़नाने के साथ-साथ कुत्ते के दफ़नाने के साक्ष्य आदि।
आलमगीरपुर	मेरठ (उत्तर प्रदेश), हिंडन नदी पर	वाईडी शर्मा	1958	मिट्टी के बर्तन, जानवरों की हड्डियाँ, पौधों के जीवाश्म, तांबे के औजार आदि।

सुरकोटदा	गुजरात	जेपी जोशी	1964	घोड़ों की हड्डियाँ, मनके, पत्थर से ढके मनके आदि।
राखीगढ़ी	हिसार (हरियाणा), दृषदावती नदी पर	सूरजभान	1969	सबसे बड़ा हड़प्पा स्थल, अग्नि वेदिका, बेलनाकार मुहर, टेराकोटा पहिया, आदि।
बनावली	हरियाणा के फतेहाबाद जिले	आरएस बिष्ट	1973-74	सड़क और नालियों के अवशेष, मोती, जौ, अंडाकार आकार की बस्ती, रेडियल सड़कों वाला एकमात्र शहर, खिलौना हल, जौ के दानों की सबसे बड़ी संख्या आदि।
धोलावीरा	गुजरात के कच्छ के रण में	आरएस बिष्ट	1990-91	तीन भागों में विभाजित होने वाला एकमात्र स्थल, विशाल जलाशय, अनूठी जल संचयन प्रणाली, बांध-तटबंध, साइनबोर्ड सिंधु लिपि आदि।
बालाकोट	अरब सागर (बलूचिस्तान, पाकिस्तान)	जॉर्ज एफ डेल्स	1973-1979	प्रारंभिक हड़प्पाकालीन खोजें, ईंटें, मनका कार्यशाला
देसलपुर	नखत्राणा तालुका, गुजरात	पी. पी. पाण्ड्या, एम. ए. धाके	1963-64	तांबे और टेराकोटा की मुहरें, भूरे रंग के मिट्टी के बर्तन

हड़प्पा स्थलों की विशेषताएँ

- नगर नियोजन में असमानता देखी गई, लेकिन एक सामान्य विशेषता **ग्रिड प्रणाली** का उपयोग थी, जिसमें सड़कें समकोण पर एक दूसरे को काटती थीं, जिससे बड़े आयताकार ब्लॉक बनते थे।
- शहर दो भागों में विभाजित थे: ऊपरी भाग या गढ़ और निचला शहर।
- मकान, जो प्रायः बहुमंजिला होते थे, में आमतौर पर प्रवेश द्वार साइड से होते थे, तथा मुख्य सड़कों पर खिड़कियां नहीं होती थीं।
- पकी हुई ईंटों का प्रमुख उपयोग उल्लेखनीय था, पत्थर की इमारतों का पूर्णतः अभाव था, और गोल स्तंभ भी अनुपस्थित थे। दक्षिणी भाग में कालीबंगन में अन्न भंडार थे।

जल निकासी प्रणाली

- जल निकासी व्यवस्था प्रभावशाली थी, लगभग हर घर में, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, अपना आंगन और स्नानघर था।
- घरों से पानी सड़कों पर बहता था, जहां नालियां बनी हुई थीं।
- एक भूमिगत जल निकासी प्रणाली सभी घरों को सड़क की नालियों से जोड़ती थी। ये नालियाँ गारे, चूने और जिप्सम से बनाई जाती थीं, ईंटों या पत्थरों से ढकी होती थीं और मैनहोल से सुसज्जित होती थीं। यह स्वास्थ्य और स्वच्छता की एक परिष्कृत समझ का संकेत है। नालियों का निर्माण पकी हुई ईंटों से किया गया था, तथा बनावली में सड़कों और नालियों के अवशेष के साक्ष्य मिले हैं।

धार्मिक जीवन

- **हड़प्पा की मुहरों** और टेराकोटा मूर्तियों से प्राप्त साक्ष्यों से पता चलता है कि **आदि शिव** एक महत्त्वपूर्ण देवता थे, जिन्हें योग मुद्रा में बैठे हुए दर्शाया गया है। **कुछ हड़प्पा स्थलों (कालीबंगन और लोथल) में अग्नि पूजा** प्रचलित थी, लेकिन हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में इसका प्रचलन नहीं था।
- **मोहनजोदड़ो में पाए जाने वाले अनुष्ठानिक स्नान का** प्रमाण हड़प्पा में नहीं था, जो धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं में विविधता को दर्शाता है। मातृदेवी का प्रतिनिधित्व करने वाली एक टेराकोटा मूर्ति, जिसके भ्रूण से एक पौधा निकल रहा था, एक **प्रमुख महिला देवता थी।** पत्थर से बने लिंग (लिंग) और स्त्री जननांगों (योनि) के अनेक प्रतीक लिंग और योनि पूजा के प्रचलन का संकेत देते हैं।
- पूजा वृक्षों (पीपल), पशुओं (बैल), पक्षियों (कबूतर, कबूतर) और पत्थरों तक विस्तारित थी, हालांकि मूर्तिपूजा के प्रचलन के बावजूद कोई मंदिर नहीं मिला।

दफ़न प्रथाएँ

- मृतकों का अंतिम संस्कार एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक गतिविधि थी, जिसमें शवों को आम तौर पर उत्तर-दक्षिण दिशा में रखा जाता था।
- कुछ कब्रों में सीप की चूड़ियाँ, हार, झुमके जैसे आभूषण तथा तांबे के दर्पण, मोती के सीप, सुरमे की छड़ियाँ और मिट्टी के बर्तन जैसी वस्तुएं पाई गईं।

अनोखी दफन प्रथाएँ

जगह	दफ़नाने की प्रथाएँ
मोहनजोदड़ो	दफ़नाने के तीन प्रकार: पूर्ण, आंशिक और दाह-पश्चात।
कालीबंगा	दफनाने के दो प्रकार: वृत्ताकार और आयताकार ग्रोव तथा पॉट दफन।
सुरकोटदा	जोड़ी दफन
लोथल	जोड़ी दफन
हड़प्पा	पूर्व-पश्चिम अक्ष, आर-37, और एच कब्रिस्तान, ताबूत दफन के साथ।

आर्थिक जीवन

- हड़प्पा की अर्थव्यवस्था सिंचित अधिशेष कृषि, पशुपालन, विभिन्न शिल्पों में दक्षता और तीव्र व्यापार (आंतरिक और बाह्य दोनों) पर आधारित थी।
- राजधानी शहर **हड़प्पा और मोहनजोदड़ो थे,** जबकि बंदरगाह शहरों में **सुत्कागेनडोर, लोथल और अलहदीनो शामिल थे।**

कृषि

- नदियों के उफान और बाढ़ के कारण उपजाऊ मिट्टी के साथ, कृषि प्रमुख व्यवसाय था। नवंबर में बीज बोए जाते थे और अप्रैल में गेहूँ और जौ की कटाई होती थी। कृषि पद्धतियों में **लकड़ी के हल** और **पत्थर की दरांतियों का इस्तेमाल किया जाता था।**
- बलूचिस्तान में जल संचयन की प्रथाओं में जल भंडारण के लिए बांधों से घिरे गबरबंद या नालों का निर्माण शामिल था।
- इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जाती थीं, जैसे गेहूं, जौ, खजूर, मटर, तिल, सरसों, बाजरा, रागी, बाजरा और ज्वार।
- लोथल और रंगपुर में चावल की भूसी मिली है। सिंधु घाटी के लोग कपास उत्पादन में अग्रणी थे, जिन्हें यूनानियों ने **सिंधन कहा था। मोहनजोदड़ो में बुने हुए सूती कपड़े के टुकड़े मिले हैं, जो कपास के उनके शुरुआती उपयोग का संकेत देते हैं।**
- नील, कुआं सिंचाई (अल्लाहदीनो), बांध और सिंचाई नहरों (धोलावीरा और शोर्तुगाई) के साक्ष्य मौजूद थे, लेकिन सिंधु लोगों को गन्ने के बारे में जानकारी नहीं थी।

पशुओं का पालतूकरण

- पशुपालन के संदर्भ में, सिंधु घाटी के निवासी पशुपालन करते थे, भैंस, भेड़, बैल, गधे, बकरी, सूअर, हाथी, कुत्ते और बिल्लियाँ पालते थे। कालीबंगन में ऊँट की हड्डियाँ मिली हैं।
- वे मृग, सूअर, हिरण, घड़ियाल और मछली जैसे जंगली जानवरों का शिकार करते थे। हालाँकि वे घोड़ों और शेरों से परिचित नहीं थे, फिर भी गुजरात के सुरकोटदा में एक घोड़े के जबड़े की हड्डी मिली।

व्यापार

- हड़प्पा स्थलों पर व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित था, जिसे अन्न भंडारों, मुहरों, एक समान लिपि तथा विनियमित वजन और माप द्वारा समर्थित किया जाता था।

- उन्होंने अंतर-क्षेत्रीय और विदेशी व्यापार दोनों में भाग लिया, जैसा कि सुमेरियन ग्रंथों में मेलुहा (सिंधु क्षेत्र का प्राचीन नाम) के साथ व्यापार संबंधों का उल्लेख मिलता है।
- **दो मध्यवर्ती व्यापारिक केंद्रों, दिलमुन (बहरीन) और माकन (मकरान तट) का उल्लेख किया गया है। परिवहन में नावों और बैलगाड़ियों** का उपयोग शामिल था। बाट और माप, जो आमतौर पर घनाकार होते थे और चूना पत्थर और स्टीटाइट जैसी सामग्रियों से बने होते थे, 16 के गुणकों में पाए गए।
- माप की रेखीय प्रणालियाँ स्पष्ट थीं, जिनके व्यापारिक संबंध अफ़ग़ानिस्तान में शोर्तुगल और मुंडीगाक, तुर्कमेनिस्तान में अल्टीन डेपे और नमाज़गा, और ईरान में टेपे याह्या और शाहरी-ए-सोख़्ता तक फैले हुए थे।
- उनके आर्थिक लेन-देन में धातु मुद्रा का प्रयोग प्रचलित नहीं था।

हड़प्पावासियों द्वारा प्रमुख आयात

सामग्री	स्थल
सोना	अफगानिस्तान, फारस, कर्नाटक
चाँदी	अफ़ग़ानिस्तान, ईरान
ताँबा	बलूचिस्तान और खेतड़ी (राजस्थान)
टिन	अफ़ग़ानिस्तान, मध्य एशिया
एगेट्स	पश्चिमी भारत
कैल्सेडनी	सौराष्ट्र
लापीस लाजुली	बदकशान और कश्मीर
फ़िरोज़ा	मध्य एशिया, ईरान
बिल्लौर	महाराष्ट्र
जेड	मध्य एशिया
कार्नेलियन	सौराष्ट्र

कला और वास्तुकला

- हड़प्पावासी उपयोगितावादी थे, यद्यपि उनमें कलात्मक समझ का पूर्ण अभाव नहीं था।

हड़प्पा मिट्टी के बर्तन

- हड़प्पा के मिट्टी के बर्तन चमकीले या गहरे लाल रंग के होते हैं और एकसमान रूप से मज़बूत और अच्छी तरह पके हुए होते हैं। इन पर लिपि भी उत्कीर्ण है। ये मुख्यतः चाक से बने होते हैं और इनमें सादे और चित्रित दोनों प्रकार के बर्तन होते हैं, जिनमें सादे प्रकार के बर्तन ज़्यादा प्रचलित हैं।
- हड़प्पा के लोग विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल करते थे, जैसे चमकदार, बहुरंगी, उत्कीर्ण, छिद्रित और घुंडीदार। चमकदार हड़प्पा मिट्टी के बर्तन प्राचीन दुनिया में अपनी तरह के सबसे पुराने उदाहरण हैं।

पशुपति मुहर

- मोहनजोदड़ो में खोजा गया, जिसे आमतौर पर आदि शिव कहा जाता है। यह स्टीटाइट से बना है और इसकी ऊँचाई 3.4 सेमी, लंबाई 3.4 सेमी और चौड़ाई 1.4 सेमी है।
- इस दुर्लभ मुहर पर एक व्यक्ति योग मुद्रा में बैठा हुआ है, जिसके पैर मुड़े हुए हैं, भुजाएँ फैली हुई हैं और हाथ घुटनों पर टिके हुए हैं। उसके सिर पर सींगों का एक जोड़ा सुशोभित है।
- योगी के चारों ओर हाथी, बाघ, गैंडा, मनुष्य और भैंस सहित विभिन्न जानवर हैं। मुहर के नीचे बकरियों / हिरणों / हिरणों का एक जोड़ा है। अधिकांश मुहरों पर एक छोटे से अभिलेख के साथ एक पशु उत्कीर्ण होता है। एचए यूनिकॉर्न मुहरों पर सबसे अधिक बार दर्शाया जाने वाला जानवर है।
- मोहनजोदड़ो में प्रसिद्ध बैल मुहर का उत्खनन किया गया।
- **मुहरों को** वर्गाकार प्रकार की मुहरों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जिन पर पशु और शिलालेख अंकित होते हैं, तथा आयताकार प्रकार की मुहरों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जिन पर केवल शिलालेख अंकित होते हैं। **मोहनजोदड़ो** से एक दाढ़ी वाले आदमी की एक स्टीटाइट मूर्ति खुदाई में मिली थी।

- **विभिन्न हड़प्पा स्थलों** से 2000 से अधिक मुहरें बरामद की गई हैं।
- सिंधु घाटी की मुहरें मेसोपोटामिया के उर, किस, सुसा और लोगस जैसे शहरों में पाई गई हैं।

हड़प्पा की मुहरें

- यह आमतौर पर स्टीटाइट नामक एक नरम पत्थर से बनाया जाता है।
- इन मुहरों को काटने और चमकाने की अनूठी तकनीक हड़प्पावासियों द्वारा विकसित एक नवीन कौशल था।

उपकरण और डिवाइस

- हड़प्पावासी तांबे, कांसे और पत्थर से बने औजारों का प्रयोग करते थे, जिससे डिजाइन और उत्पादन तकनीक दोनों में उल्लेखनीय एकरूपता प्रदर्शित होती थी।

सिंधु घाटी के लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले तांबे और कांसे के औजार

- बुनियादी औजार प्रकार थे सपाट **कुल्हाड़ी**, छेनी, चाकू, भाले और तांबे और कांस्य उपकरणों के लिए तीर के सिरे।
- सभ्यता के बाद के चरणों में, वे खंजर और चाकू का भी उपयोग करने लगे थे। वे मछली पकड़ने के लिए काँटों और काँसों तथा ताँबे की ढलाई की तकनीकों से परिचित थे। **पत्थर के औज़ार** भी आम इस्तेमाल में थे। **इनका उत्पादन सिंध के सुक्कुर** जैसे कारखानों में बड़े पैमाने पर किया जाता था और फिर इन्हें विभिन्न शहरी केंद्रों में भेजा जाता था। इससे औज़ारों के प्रकारों में एकरूपता का पता चलता है।

हड़प्पा के मोती

- हड़प्पा के लोग अपने आप को **बहुमूल्य** और **अर्ध-कीमती पत्थरों** जैसे कि **एगेट, फ़िरोज़ा, कार्नेलियन** और **स्टीटाइट** से बने उत्तम मोतियों से सजाते थे।
- **मनका उत्पादन के लिए स्टीटाइट** सबसे आम सामग्री थी, हालांकि **सोने** और **चांदी के मनके** भी खोजे गए हैं।
- तिपतिया घास के पैटर्न वाले बैरल के आकार के मोती हड़प्पा संस्कृति से जुड़ी विशिष्ट विशेषताएं हैं, और कार्नेलियन मोती अक्सर पाए जाते हैं। मोहनजोदड़ो में, सोने के मोतियों, पट्टियों और अन्य आभूषणों से युक्त आभूषणों का एक भंडार मिला। इसके अतिरिक्त, चाँदी के छोटे बर्तन भी खोजे गए।

लिपि और भाषा

- हड़प्पा लिपि का सबसे पहला नमूना 1853 में खोजा गया था।
- लिपि और भाषा अभी तक समझ में नहीं आई है और चित्रात्मक प्रकृति की हैं, जिनमें मछली का प्रतीक सबसे ज़्यादा बार दर्शाया गया है। लगभग 250 से 400 चित्रलिपि हैं।
- अक्षरों का एक दूसरे पर अतिव्याप्त होना यह दर्शाता है कि इसे पहली पंक्ति में दाएं से बाएं और फिर दूसरी पंक्ति में बाएं से दाएं लिखा गया था, इस शैली को बुस्ट्रोफेडॉन के नाम से जाना जाता है।
- गुजरात के धोलावीरा से 10 चित्रलेखों वाला एक साइनबोर्ड मिला है।

हड़प्पा संस्कृति का पतन

- हड़प्पा संस्कृति लगभग 1800 **ईसा पूर्व** तक फली-फूली, उसके बाद इसका पतन शुरू हो गया।
- चोलिस्तान जैसे क्षेत्रों सहित कई परिपक्व हड़प्पा स्थल 1800 ईसा पूर्व तक वीरान हो चुके थे। गुजरात, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में नई बस्तियों में आबादी का विस्तार हुआ।
- विभिन्न विद्वानों द्वारा गिरावट के संबंध में विभिन्न सिद्धांत प्रस्तावित किये गये हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं;
- **ब्रिटिश पुरातत्ववेत्ता मॉर्टिमर व्हीलर** के अनुसार, आर्य लोगों ने अचानक सिंधु घाटी सभ्यता पर कब्ज़ा कर लिया और उसे अपने अधीन कर लिया, जिसके प्रमाण मोहनजोदड़ो पुरातात्विक स्थल के प्रमुख क्षेत्र में बिना दफ़नाए शवों के मिले हैं।

  नोट:- जलवायु **परिवर्तन** सिद्धांत का मानना है कि पूर्व की ओर बढ़ने वाले मानसून या हवाओं के कारण भारी वर्षा हुई होगी, जिससे हड़प्पा के पर्यावरण को नुकसान पहुंचा होगा।

- **ह्यूग ट्रेवर लैम्ब्रीक ने** 1967 में सुझाव दिया था कि सिंधु नदी के पूर्व की ओर पलायन के कारण बार-बार बाढ़ आती है, जिसके परिणामस्वरूप कृषि उपज का नुकसान होता है।
- यह सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि नया घग्गर-हकरा जलमार्ग सिंधु सभ्यता का केंद्र बन गया, जिसके कारण 1900 ईसा पूर्व के प्रारंभ में कारीगरों और व्यापारियों का सौराष्ट्र और हरियाणा की ओर महत्त्वपूर्ण प्रवास हुआ।

सिंधु घाटी सभ्यता का पतन: विभिन्न दृष्टिकोण

गिरावट के कारण	विचारकों
बाहरी आक्रामकता	पिगॉट, गॉर्डन-चाइल्ड
टेक्टोनिक शिफ्ट द्वारा जलप्लावन	श्री साहनी
महामारी	केवीआर कैनेडी
टेक्टोनिक गड़बड़ी (जैसे, धोलावीरा)	डेल्स और राइक्स
जलवायु परिवर्तन	आरएल स्टीन, एएन घोष
वनों की कटाई, संसाधनों की कमी, पारिस्थितिक असंतुलन	वाल्टर फेयरसर्विस
बाढ़ (जैसे, मोहनजोदड़ो)	मार्शल, एसआर राव, मैकी
घग्गर नदी के मार्ग में परिवर्तन के कारण विनाश	जी.एफ. डेल्स

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित कलाकृति एवं स्थल को सुमेलित कीजिये

कलाकृति	स्थल
A. लाल बलुआ पत्थर का पुरुष धड़	**I. मोहनजोदड़ो**
B. दाढ़ीयुक्त पुरुष की पाषाण प्रतिमा	**II. हड़प्पा**
C. पुरुष एवं कुत्ता कांस्य के रथ की प्रतिकृति पर	**III. लोथल**
D. पकी हुई मिट्टी से निर्मित माव की प्रतिकृति	**IV. दायमाबाद**

(a) A-III B-I C-IV D II (b) A-II B-I C-IV D-III
(c) A-I B-II C-IV D III (d) A-III B-II C-IV D-I **[b]**

2. कथन- I : सिन्धु सरस्वती सभ्यता नगर योजना हेतु प्रसिद्ध थी।
कथन- II : उन्नत सिन्धु सरस्वती सभ्यता का विकास सिन्धुघाटी की सहायक नदियों और सरस्वती नदी क्षेत्र के किनारे हुआ था।
उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) कथन I और II दोनों सत्य हैं।
(b) कथन I और II दोनों असत्य हैं।
(c) कथन I सत्य है, किन्तु कथन II असत्य है।
(d) कथन I असत्य है, किन्तु कथन II सत्य है। **[a]**

3. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए

सूची-I	**सूची-II**
A. बालाकोट	**(1) गुजरात**
B. चन्हूदडो	**(2) बलूचिस्तान**
C. भगतराव	**(3) पंजाब**
D. रोपड़	**(4) सिन्ध**

(a) A-1 B-2 C-3 D-4 (b) A-1 B-3 C-2 D-4
(c) A-2 B-4 C-1 D-3 (d) A-2 B-4 C-3 D-1 **[c]**

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
i. सिंधु सभ्यता में पशुपालन महत्वपूर्ण था।
ii. ऊँट और घोड़े के व्यापक प्रमाण मिलते हैं।
iii. बैल कृषि कार्य का मुख्य आधार था।
उपर्युक्त में से सही कथन है/हैं-
(a) केवल i (b) i और iii
(c) ii और iii (d) i, ii और iii **[b]**

5. हड़प्पा शहरों की सड़क योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. हड़प्पा शहरों में मुख्य सड़कें आम तौर पर उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दिशाओं में चलती थीं।
2. गलियाँ और उप-गलियाँ इलाके की प्राकृतिक ढलान के अनुरूप अनियमित रूप से संरेखित थीं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2 **[a]**

6. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए

सूची-I (प्राचीन स्थल)	**सूची-II (साक्ष्य)**
(A) बालाकोट	**(I) मनका बनाने का कारखाना**
(B) सुरकोटड़ा	**(II) जहाज की गोदी**
(C) लोथल	**(III) कलश शवाधान**
(D) चन्हुदडो	**(IV) सीप उद्योग**

(a) a- (IV) b- (III) c- (II) d- (I)
(b) a- (I) b- (II) c- (III) d- (IV)
(c) a- (III) b- (I) c- (IV) d- (II)
(d) a- (II) b- (IV) c- (III) d- (I) **[a]**

7. कथन (A) : मोहनजोदड़ो करीब 2000 ई. पू. तक उजड़ गया था किन्तु दूसरी ओर कालीबंगा और लोथल 18वीं शताब्दी ई. पू. तक विद्यमान रहे थे।
कारण (R) : ऐसा प्रतीत होता है कि हड़प्पा संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों के अस्तित्व में अन्तर था।
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं किन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है किन्तु (R) सही है **[a]**

8. निम्नलिखित युग्मों को सुमेलित कीजिए।

खोज	**हड़प्पा स्थल**
(1) खेतों की जुताई	**A. मोहनजोदड़ो**
(2) कोई दुर्ग नहीं	**B. चन्हुदड़ो**
(3) घोड़ों की हड्डियाँ	**C. कालीबंगा**
(4) किलाबंदी वाला निचला शहर	**D. सुरकोटडा**

(a) 1-C, 2-B, 3-A, 4-D (b) 1-B, 2-C, 3-D, 4-A
(c) 1-C, 2-B, 3-D, 4-A (d) 1-B, 2-C, 3-A, 4-D **[c]**

9. सुमेलित कीजिए:
A. गुजरात – (1) लोथल
B. हरियाणा – (2) राखीगढ़ी
C. राजस्थान – (3) कालीबंगा
D. पाकिस्तान – (4) मोहनजोदड़ो
कूट:-
(a) 1 2 3 4 (b) 2 1 3 4
(c) 1 3 2 4 (d) 2 3 1 4 **[a]**

10. 'फ़ेयॅन्स' के बारे में निम्नलिखित में से कौन से कथन पूर्ण सत्य हैं?
(I) फ़ेयॅन्स की खदानें मेहरगढ़ में मिली हैं।
(II) फ़ेयॅन्स प्राकृतिक तौर पर पाए जाते थे।
(III) बालू या स्फटिक पत्थर के चूर्ण को गोंद में मिलाकर उनसे वस्तुएँ बनाई जाती थीं।
(IV) उसके बाद उन वस्तुओं पर एक चिकनी परत चढाई जाती थी।
(V) फ़ेयॅन्स से मनके, चूड़ियाँ, झुमके और छोटे बर्तन बनाए जाते थे।
(a) I, II, III (b) II, III, IV
(c) III, IV, V (d) IV, V, I **[c]**

♦♦♦♦

भारत का भूगोल

स्थिति एवं विस्तार

01

- भारत के उत्तर – पूर्व में हिमालय, दक्षिण पूर्व में बंगाल की खाड़ी, दक्षिण पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में मन्नार की खाड़ी है।
- भारत का कुल क्षेत्रफल **32,87,263 किमी.** तथा **1269219.34 वर्ग मील** है जो विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 2.42% है।(नवीन आंकड़े - 32,87,469 वर्ग किमी.)
- जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व में **दूसरे स्थान पर** है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या लगभग 121 करोड़ है। भारत की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या का 17.5% है।
- भारतीय भू– भाग की लंबाई 3214 किमी. (उत्तर से दक्षिण) और 2933 किमी. (पूर्व से पश्चिम) है। इनके बीच का अन्तर 281 किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से **भारत विश्व का सातवाँ बड़ा देश** है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व के बड़े देश – 1. रूस 2. कनाडा 3. चीन 4. संयुक्त राज्य अमेरिका 5. ब्राजील 6. ऑस्ट्रेलिया 7. भारत।

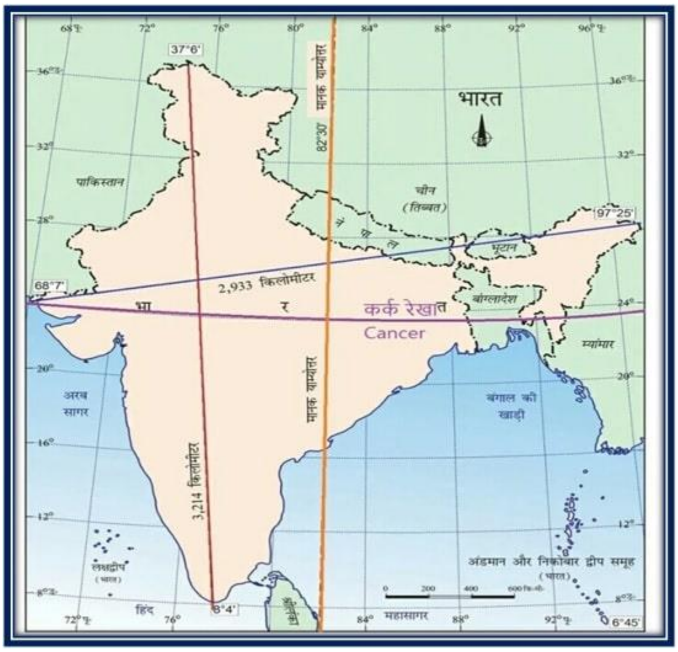

❖ स्थिति–

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4′ उत्तरी अक्षांश से 37°6′ उत्तरी अक्षांश के मध्य स्थित है।
- भारत का देशांतरीय विस्तार 68°7′ पूर्वी देशांतर से 97°25′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।
- अक्षांशीय दृष्टि से भारत उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।
- भारत का दक्षिणतम बिन्दु 6°45′ उत्तरी अक्षांश है तथा यह **इंदिरा पॉइंट** अण्डमान निकोबार में स्थित है।
- **इंदिरा कॉल** भारत का उत्तरी बिन्दु गिलगित (जम्मू कश्मीर) में स्थित है।
- कन्याकुमारी/केप केमोरिन भारत का मुख्य भूमि का दक्षिणतम बिन्दु है जो तमिलनाडु में स्थित है।
- कर्क रेखा का दक्षिणी भाग उष्ण कटिबन्ध में तथा उत्तरी भाग उपोष्ण/शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है।
- भारत का पूर्वी बिन्दु किबिथू वालांगु (त्वांग) है जो अरुणाचल प्रदेश में स्थित है।
- भारत का पश्चिमी बिन्दु गोहरमाता (गौरमाता) है जो कच्छ (गुजरात) में स्थित है।

❖ कर्क रेखा (उत्तरी अक्षांश)-

- कर्क रेखा भारत के **8 राज्यों** में से होकर गुजरती है।
- कर्क रेखा गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, मिजोरम से गुजरती है।

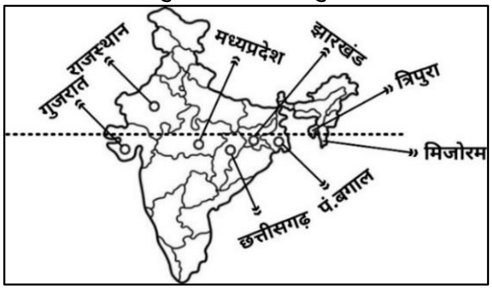

- कर्क रेखा की सबसे कम लंबाई **राजस्थान** में है।
- कर्क रेखा की सबसे अधिक लंबाई **मध्य प्रदेश** में है।
- कर्क रेखा के नजदीक गांधीनगर, उज्जैन, रांची, भोपाल, अगरतला शहर स्थित है।
- कर्क रेखा के समीप स्थित राजधानियाँ :- रांची, आईजॉल, भोपाल, गांधीनगर, अगरत्तला।

❖ मानक समय निर्धारक रेखा–

- भारत की मानक समय निर्धारक रेखा **82°30′ (** $82\frac{1}{2}$ **)** पूर्वी देशान्तर रेखा को कहा जाता है।
- 82°30′ पूर्वी देशान्तर रेखा नैनी कस्बा (मिर्जापुर), प्रयागराज उत्तर प्रदेश में से गुजरती है।
- 82°30′ पूर्वी देशांतर रेखा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा एवं आंध्र प्रदेश राज्यों से गुजरती हैं।
- भारतीय मानक समय ग्रीनविच माध्य समय से 5 घंटे 30 मिनट आगे है।

भारत की सीमाएँ

- **स्थलीय सीमा –** भारत की स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है।
- **तटीय सीमा –** मुख्य भूमि की तटीय सीमा की लम्बाई 6,100 किमी. है। अंडमान–निकोबार तथा लक्षद्वीप समूहों की तट रेखा को भी शामिल किया जाए तो भारत की तटीय सीमा 7516.6 किमी. है। (राष्ट्रीय हाइड्रोग्राफिक संगठन द्वारा नई गणना के अनुसार, इसकी कुल लंबाई **11,084.50 किमी.** है।)
- भारत की स्थलीय एवं जलीय सीमा को मिलाकर कुल लंबाई 22,716.6 किमी. है। (नवीन आंकड़े 26284.5 किमी.)
- सर्वाधिक तटीय सीमा वाले राज्य – गुजरात, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु है।
- न्यूनतम तटीय सीमा वाले राज्य – गोवा, कर्नाटक है।

❖ भारत की जलीय सीमा-

- हिन्द महासागर में भारत की केन्द्रीय स्तिथि है।
- देश की जलीय सीमा को 3 भागों में वर्गीकृत किया गया है–

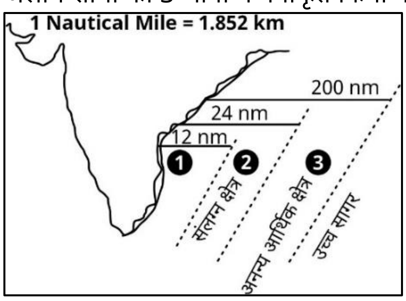

(i) प्रादेशिक जल सीमा – आधार रेखा से समुद्र में 12 समुद्री मील तक प्रादेशिक समुद्री सीमा है। समुद्र में प्रादेशिक (12 नॉटिकल) तक भारत का संपूर्ण अधिकार है।

आधार रेखा टेढ़े–मेढ़े तट को मिलाने वाली काल्पनिक रेखा है जिसके मध्य के सागरीय जल को आन्तरिक जल कहते हैं।

(ii) संलग्न क्षेत्र – अविच्छिन्न मण्डल या संलग्न क्षेत्र की दूरी आधार रेखा से 24 समुद्री मील (1 समुद्री मील = 1.852 किमी.) तक है। इस क्षेत्र में भारत को साफ सफाई, सीमा शुल्क वसूली और वित्तीय अधिकार प्राप्त है।

(iii) अनन्य आर्थिक क्षेत्र – यह आधार रेखा से 200 समुद्री मील की दूरी तक विस्तृत है। इसमें भारत को वैज्ञानिक अनुसंधान, नए द्वीपों की खोज व निर्माण तथा वैज्ञानिक संसाधनों के दोहन का अधिकार प्राप्त है।

◈ **उच्च सागर -** किसी भी राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से परे।

अंतर्राष्ट्रीय सीमा

◈ इस विशाल देश के तीन ओर अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिन्द महासागर है।

◈ भारत की मुख्य भूमि के अतिरिक्त बंगाल की खाड़ी में अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह और अरब सागर में लक्षद्वीप समूह स्थित है जो मुख्य भूमि से समुद्र द्वारा अलग है।

❖ **रेडक्लिफ सीमा–**

◈ इस सीमा की लंबाई 3323 किमी. है।

◈ अंग्रेज अधिकारी सर साइरिल रेडक्लिफ द्वारा **भारत–पाकिस्तान** की सीमा का निर्धारण 1947 में किया गया था। इस सीमा को रेडक्लिफ सीमा कहा जाता है।

❖ **मैकमोहन रेखा–**

◈ इस सीमा की लंबाई **–** 3488 किमी. है।

◈ सर हेनरी मैकमोहन द्वारा **भारत और चीन** के बीच एक अंतर्राष्ट्रीय सीमा का निर्धारण 1914 में किया गया, जिसे मैकमोहन रेखा कहा जाता हैं।

❖ **डूरण्ड रेखा–**

◈ इस सीमा की लंबाई 106 किमी. है ।

◈ सर मोर्टिसुर डूरण्ड द्वारा एक भारत तथा अफगानिस्तान के बीच अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाई गई, जिसे डूरण्ड रेखा के नाम से जाना जाता है।

◈ वर्ष 1947 में पाकिस्तान के बनने के बाद डूरण्ड रेखा **पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान** के बीच एक अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा बन गई।

❖ **भारत–म्यांमार सीमा** –

◈ इस सीमा की लंबाई 1643 किमी. है।

◈ अराकान योमा पर्वतमाला भारत तथा म्यांमार के बीच सीमा बनाती है।

◈ भारत – म्यांमार सीमा का निर्धारण पटकोई, नागा, मिसीपी और अराकानयोमा की पहाड़ियों से होता है।

◈ पूर्वोत्तर राज्य (सात बहनों के नाम से विख्यात राज्य) –अरुणाचल प्रदेश, असम, त्रिपुरा, नागालैण्ड, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम।

◈ सिक्किम व मेघालय की सीमा केवल एक – एक राज्य से लगती है। सिक्किम की सीमा पश्चिम बंगाल से तथा मेघालय की सीमा असम से लगती है।

◈ तीन ओर से बांग्लादेश से घिरा हुआ राज्य त्रिपुरा है।

◈ सिक्किम तीन तरफ से अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाता है।

◈ **NCERT** के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप में 7 प्रमुख देश भारत, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव सम्मिलित है।

देश की सीमा पर स्थित राज्य

क्र. सं.	देश	संबंधित राज्य	सीमा का नाम	सीमा की लम्बाई
1.	बांग्लादेश	असम, पश्चिम बंगाल, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम	जीरो लाइन	4096 किमी.
2.	चीन	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश	मैकमोहन रेखा	3488 किमो.
3.	पाकिस्तान	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख	रेडक्लिफ लाइन	3323 किमी.
4.	नेपाल	उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल, सिक्किम	–	1751 किमी.
5.	म्यांमार	अरूणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम	–	1643 किमी.
6.	भूटान	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरूणाचल प्रदेश	–	699 किमी.
7.	अफगानिस्तान	लद्दाख	डूरण्ड रेखा	106 किमी.

❖ **भारत की जलीय सीमा–**

◈ **9° चैनल –** मिनिकॉय एवं लक्षद्वीप के मध्य सीमा निर्धारण करता है।

◈ **10° चैनल –** अण्डमान (लिटिल अण्डमान) एवं निकोबार (कार निकोबार) के मध्य सीमा निर्धारण करता है।

◈ **6° चैनल (ग्रेट चैनल) –** सुमात्रा (इण्डोनेशिया) तथा ग्रेट निकोबार (अण्डमान निकोबार भारत) के मध्य सीमा निर्धारण करता है।

◈ **8° चैनल –** मालदीव एवं मिनाकॉय (लक्षद्वीप) के मध्य सीमा निर्धारण करता है।

◈ **16° उत्तरी अक्षांश रेखा–** यह सह्याद्रि पर्वतमाला को दो बराबर भागों में बाँटती है।

◈ **24° उत्तरी अक्षांश रेखा** – यहाँ पर भारत व पाकिस्तान के मध्य सरक्रीक सीमा विवाद है।

◈ **डक्कन पास –** लघु अण्डमान एवं दक्षिण अण्डमान के मध्य सीमा निर्धारण करता है।

◈ **कोको चैनल –** लैंडफॉल द्वीप (उत्तरी अण्डमान) एवं कोको द्वीप (म्यांमार) के मध्य।

❖ **पाक जल संधि –**

◈ यह **भारत व श्रीलंका** के मध्य स्थित है, जो मन्नार की खाड़ी को बंगाल की खाड़ी से जोड़ती है।

◈ भारत के तमिलनाडु व श्रीलंका के मध्य आदम ब्रिज स्थित है। आदम ब्रिज की शुरुआत धनुष्कोडी नामक स्थान से होती है। पम्बन द्वीप (रामेश्वरम्) इसी ब्रिज का हिस्सा है, इसे रामसेतु भी कहा जाता है।

❖ **मन्नार की खाड़ी– (तमिलनाडु)**

◈ यह दक्षिण पूर्व तमिलनाडु व श्रीलंका के मध्य स्थित है।

❖ **भारत के राज्य व केन्द्रशासित प्रदेश –**

◈ वर्तमान में भारत में **28 राज्य व 8 केन्द्रशासित प्रदेश** है।

◈ जनसंख्या के दृष्टिकोण से **उत्तर प्रदेश** भारत का सबसे बड़ा राज्य तथा **सिक्किम** सबसे छोटा राज्य है।

◈ क्षेत्रफल की दृष्टि से **राजस्थान** भारत का सबसे बड़ा राज्य है तथा **गोवा** सबसे छोटा राज्य है।

◈ **कच्छ (गुजरात)** भारत का सबसे बड़ा जिला तथा **माहे (पुडुचेरी)** भारत का सबसे छोटा जिला है।

◈ जम्मू कश्मीर, दिल्ली व पुडुचेरी भारत के केवल तीन केन्द्र शासित प्रदेश ऐसे है, जिनमें विधानसभा है।

◈ उत्तर प्रदेश का **सोनभद्र** देश का एकमात्र ऐसा जिला है जो चार राज्यों (छत्तीसगढ, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड) की सीमा को स्पर्श करता है।

अभ्यास प्रश्न

1. भारत का क्षेत्रफल संसार के क्षेत्रफल का 2.42% है, परन्तु इसकी -
(a) सम्पूर्ण मानव जाति की 17% जनसंख्या है
(b) सम्पूर्ण मानव जाति की 16% जनसंख्या है
(c) सम्पूर्ण मानव जाति की 18% जनसंख्या है
(d) सम्पूर्ण मानव जाति की 28% जनसंख्या है **[a]**

2. निम्नलिखित राज्यों में से कौन-से उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती है?
1. पंजाब 2. राजस्थान
3. छत्तीसगढ़ 4. झारखण्ड
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए –
(a) 2, 3 और 4 (b) 1, 2, 3 और 4
(c) 1 और 4 (d) 1 और 3 **[a]**

3. भारत के निम्नलिखित राज्यों को उनके भौगोलिक क्षेत्र के घटते क्रम में व्यवस्थित कीजिए
1. राजस्थान 2. तमिलनाडु
3. महाराष्ट्र 4. कर्नाटक
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए –
(a) 1, 2, 3, 4 (b) 3, 1, 4, 2
(c) 1, 3, 4, 2 (d) 3, 4, 1, 2 **[c]**

4. निम्नलिखित कथनों में से कौन-से भारत के बारे में सही हैं?
1. भारत विश्व का पाँचवाँ बड़ा देश है।
2. यह स्थलमण्डल के कुल क्षेत्रफल का लगभग 2.4 प्रतिशत भाग अधिकृत किए हुए हैं।
3. समूचा भारत उष्ण कटिबंध में स्थित है।
4. 82°30' पूर्वी देशान्तर का उपयोग भारतीय मानक समय को निर्धारित करने के लिए किया जाता है।
कूट:
(a) केवल 2 व 3 (b) केवल 1 व 2
(c) केवल 1 व 3 (d) केवल 2 व 4 **[d]**

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए एवं नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए –
1. असम, भूटान तथा बांग्लादेश की सीमाओं से लगा हुआ।
2. पश्चिम बंगाल, भूटान तथा नेपाल की सीमाओं से लगा हुआ है।
3. मिजोरम, बांग्लादेश तथा म्यांमार की सीमाओं से लगा हुआ है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(a) केवल 1 व 2 (b) केवल 2 व 3
(c) केवल 1 व 3 (d) उपर्युक्त सभी **[d]**

6. म्यांमार की सीमा के सहारे भारत के राज्यों का उत्तर से दक्षिण का सही क्रम क्या है?
(a) अरुणाचल प्रदेश, असम, नागालैण्ड, मणिपुर
(b) अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम
(c) असम, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम
(d) अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, नागालैण्ड, मिजोरम **[b]**

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा सही उत्तर का चयन नीचे दिए कूट से कीजिए:
A. 'कयाल' मलाबार तट की विशिष्ट आकृतियाँ हैं।
B. गारो और खासी की पहाड़ियाँ मेघालय पठार पर स्थित हैं।
C. जास्कर और पीर पंजाल की श्रेणियाँ उत्तराखण्ड में स्थित हैं।
कूट :
(a) A, B और C सही (b) B और C सही
(c) A और B सही (d) A और C सही **[c]**

8. निम्नलिखित में से असुमेलित युग्म को छाँटिए-
(a) भारत का उत्तरी बिंदु – इंदिरा कॉल
(b) भारत का दक्षिणतम बिंदु – कन्याकुमारी
(c) भारत का पूर्वी बिंदु - किबिथु
(d) भारत का पश्चिमी बिंदु – गुहार मोती **[b]**

9. क्षेत्रफल की दृष्टि से तीन सबसे बड़े केन्द्रशासित प्रदेशों का अवरोही क्रम है-
(a) दिल्ली, पुडुचेरी, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह
(b) पुडुचेरी, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली
(c) जम्मू कश्मीर, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली
(d) अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह, जम्मू कश्मीर, दिल्ली **[d]**

10. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 82°30' पूर्वी देशान्तर के सम्बन्ध में सही नहीं है?
(a) यह भारत के लिए मानक देशान्तर रेखा है।
(b) इस रेखा का स्थानीय समय ग्रीनविच समय से 5.30 घण्टे आगे है।
(c) यह रेखा इलाहाबाद के समीप से गुजरती है।
(d) यह भारत को दो बराबर भागों में विभाजित करती है। **[d]**

11. निम्नलिखित में किस राज्य-समूह की सीमाएँ बांग्लादेश से जुड़ी हुई हैं?
(a) उत्तर प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम
(b) त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, असम, मणिपुर
(c) पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा, मेघालय
(d) असम, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा **[c]**

12. सूची-1 को सूची-II से सुमेलित कीजिए व सूचियों के नीचे दिए कूटों का प्रयोग करते हुए सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-1 (नदी) =	सूची-II (उद्गम)
(A) दामोदर	**(i) त्र्यंबक के समीप**
(B) सोन	**(ii) छोटानागपुर पठार**
(C) कावेरी	**(iii) अमरकंटक पठार**
(D) गोदावरी	**(iv) ब्रह्मगिरि**

कूट :
(a) A-ii, B-iii, C-i, D-iv (b) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(c) A-iii, B-ii, C-iv, D-i (d) A-iv, B-iii, C-i, D-ii **[b]**

13. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए व नीचे दिए गए कूट की सहायता से विकल्प का चुनाव कीजिए–

A. 8° चैनल	**1. मिनिकॉय एवं कवरत्ती (लक्षद्वीप) के मध्य**
B. 9° चैनल	**2. मालदीव व मिनिकॉय के बीच**
C.10° चैनल	**3. लिटिल अण्डमान एवं कार निकोबार के बीच**
D.डक्कन पास	**4. लघु अण्डमान एवं दक्षिण अण्डमान के बीच**

कूट :-
(a) A-3, B-2, C-4, D-1 (b) A-2, B-1, C-4, D-3
(c) A-2, B-1, C-3, D-4 (d) A-1, B-2, C-4, D-3 **[c]**

14. निम्नलिखित में से असत्य कथन की पहचान कीजिए-
(a) भारत की उत्तर से दक्षिण तक लंबाई 3214 किमी. है।
(b) भारत की पूर्व से पश्चिम तक चौड़ाई 2933 किमी. है।
(c) भारत उत्तर-पश्चिम गोलार्द्ध में स्थित है।
(d) भारत की तटरेखा की लंबाई 7516.6 किलोमीटर है। **[c]**

15. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(a) भारत की सबसे लंबी स्थलीय सीमा बांग्लादेश के साथ है।
(b) बांग्लादेश की सीमा मेघालय व असम से लगती है।
(c) नेपाल की सीमा असम व सिक्किम से लगती है।
(d) भूटान की सीमा असम व पश्चिम बंगाल से लगती है। **[c]**

♦♦♦♦

भारतीय राजव्यवस्था

भारतीय संविधान की प्रकृति एवं विशेषताएँ

01

भारतीय संविधान की प्रकृति

- ◈ भारतीय संविधान की प्रकृति को लेकर संविधान सभा में व्यापक चर्चा हुई। प्रश्न यह था कि भारत का संविधान संघात्मक (Federal) है या एकात्मक (Unitary)। संविधान निर्माताओं ने दोनों व्यवस्थाओं के गुणों को अपनाते हुए भारत के लिए एक संघात्मक व्यवस्था के साथ सशक्त केंद्र का निर्माण किया।
- ◈ संविधान के अनुच्छेद 1 में भारत को "राज्यों का संघ (Union of States)" कहा गया है, न कि "राज्यों का महासंघ ।

महात्मा गांधी की संविधान से अपेक्षा (1931)

- ◈ वर्ष 1931 में अपनी पत्रिका 'यंग इंडिया' में महात्मा गांधी ने भारत के भावी संविधान के संबंध में अपनी अपेक्षाएँ व्यक्त करते हुए लिखा— "मैं भारत के लिए ऐसा संविधान चाहता हूँ जो उसे गुलामी और अधीनता से मुक्त करे। मैं ऐसे भारत के लिए प्रयास करूँगा जिसे सबसे गरीब व्यक्ति भी अपना देश समझे और उसे यह अनुभव हो कि उसके निर्माण में उसकी भी प्रभावी भागीदारी है। ऐसा भारत जिसमें ऊँच-नीच का कोई भेद न हो, सभी धर्मों और समुदायों के लोग सौहार्दपूर्वक रहें, छुआछूत तथा शराब एवं अन्य नशीले पदार्थों के लिए कोई स्थान न हो तथा महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हों। मैं इससे कम पर संतुष्ट नहीं होऊँगा।"

संविधान की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. सबसे बड़ा लिखित संविधान

- ◈ यह एक लिखित संविधान है जिसमें 395 अनुच्छेद हैं, जो मूल रूप से 22 भागों और 8 अनुसूचियों में विभाजित है।
- ◈ भारतीय संविधान विश्व का सबसे बड़ा संविधान है।
- ◈ आईवर जैनिग्स ने इसे वकीलों का स्वर्ग कहा है।

2. कठोरता और लचीलेपन का मिश्रण

- ◈ भारतीय संविधान न तो कठोर है और न ही लचीला, बल्कि दोनों व्यवस्थाओं का एक मिश्रण है।
- ◈ **अनुच्छेद में 368 में दो तरह के संशोधनों का प्रावधान है।**

  विशेष बहुमत – दोनों सदनों में कुल सदस्यों का बहुमत + उपस्थित व मतदान करने वालों का 2/3 बहुमत

  विशेष बहुमत – कुल राज्यों के आधे से अधिक राज्यों से अनुमोदन।

सामान्य बहुमत से पारित होने वाले प्रावधान -

(i) राज्यों के नाम, सीमा, क्षेत्र और सम्मिलन व पृथक्करण (अनु.4)
(ii) विधानसभा के गठन व उन्मूलन (अनु. 169)
(iii) अनुसूची 5 व 6 में परिवर्तन
(iv) केन्द्र शासित प्रदेशों के विधानमण्डल व मंत्रिपरिषद का गठन (अनु. 239-A)

Note:- सामान्य बहुमत से किया गया संशोधन अनु.368 के तहत नहीं आता है तथा यह संविधान संशोधन की श्रेणी में भी नहीं आते हैं।

- ◈ कम से कम आधे राज्यों के विधानमंडलों के अनुसमर्थन से होने वाले संशोधन।
- ◈ अनुच्छेद 54- राष्ट्रपति का निर्वाचन
- ◈ अनुच्छेद 55- राष्ट्रपति निर्वाचन की रीति
- ◈ अनुच्छेद 73- संघ कार्यपालिका शक्ति विस्तार
- ◈ अनुच्छेद 162- राज्य कार्यपालिका शक्ति विस्तार
- ◈ अनुच्छेद 241- संघ राज्य क्षेत्र के लिए उच्च न्यायालय
- ◈ अनुच्छेद 279 क- जीएसटी परिषद्

  भाग 5 का अध्याय 4 संघ की न्यायपालिका

  भाग 6 का अध्याय 5-राज्यों के उच्च न्यायालय

  भाग 11 का अध्याय I संबंध। -संघ राज्यों के मध्य विधायी

  सातवीं अनुसूची- संघात्मक व्यवस्था
- ◈ संसद में राज्यों के प्रतिनिधित्व में अनुच्छेद 368 के -उपबंधों में परिवर्तन हेतु - (स्वयं अनु.368)

  Note:- इन सभी प्रावधानों में बदलाव हेतु आधे से अधिक राज्यों का अनुमोदन आवश्यक है।

3. संघीय व्यवस्था एवं एकात्मक विशेषताएँ

- ◈ शासन की संघीय विशेषताएँ सरकार की दोहरी प्रणाली हैं यानी केंद्र और राज्य, कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका के बीच शक्तियों का विभाजन जो राज्य के तीन अंग हैं।
- ◈ संविधान की सर्वोच्चता, स्वतंत्र न्यायपालिका और द्विसदनीयता भारतीय संविधान में ये सभी विशेषताएँ समाहित हैं। इस प्रकार यह एक संघीय व्यवस्था है।
- ◈ लेकिन, इसमें कई एकात्मक विशेषताएँ भी शामिल हैं जैसे एक मजबूत केंद्र, केंद्र और राज्यों के लिए सामान्य अखिल भारतीय सेवाएँ, आपातकालीन प्रावधान जो संविधान को एकात्मक में संशोधित कर सकते हैं, केंद्र की सलाह पर राष्ट्रपति द्वारा राज्यपालों की नियुक्ति, आदि।
- ◈ भारतीय संविधान के अनुच्छेद 1 में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि भारत 'राज्यों का संघ' है जिसके दो अर्थ है।

  (1) भारतीय संघ राज्यों के बीच किसी समझौते का परिणाम नहीं है।

  (2) किसी भी राज्य को संघ को अलग होने का अधिकार नहीं।

महत्वपूर्ण कथन :-

(1) भारत सौदेबाजी संघ = मॉरिज जॉन्स
(2) सहयोगात्मक संघ = ग्रेनविल ऑस्टिन
(3) फेडरेशन विद ए सेंट्रलाइजिंग टेडेंसी = आइवर जेंनिग्स
(4) एकात्मकता की भावना का संघ = के.सी. व्हीयर

4. संप्रभु समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और गणतंत्र

- ◈ प्रस्तावना के अनुसार, भारत एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य है।
- ◈ **संप्रभु :** संप्रभु शब्द इस बात पर जोर देता है कि भारत अब किसी बाहरी सत्ता पर निर्भर नहीं है।
- ◈ **समाजवादी:** "समाजवादी" शब्द संविधान के 42वें संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा प्रस्तावना में डाला गया है । सामान्य तौर पर, इसका मतलब राज्य द्वारा उत्पादन और वितरण के साधनों पर किसी प्रकार का स्वामित्व है। भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था को चुना है और अब निजीकरण की ओर बढ़ रहा है।
- ◈ **धर्मनिरपेक्षता :** धर्मनिरपेक्षता शब्द का अर्थ एक ऐसा राज्य है जिसका राज्य के मान्यता प्राप्त धर्म के रूप में अपना कोई धर्म नहीं है। यह सभी धर्मों को समान रूप से मानता है।
- ◈ **लोकतांत्रिक :** शब्द "लोकतांत्रिक" इंगित करता है कि संविधान ने सरकार का एक ऐसा रूप स्थापित किया है जो लोगों की इच्छा से अधिकार प्राप्त करता है। शासक जनता द्वारा चुने जाते हैं। न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व लोकतंत्र की आवश्यक विशेषताएँ हैं।
- ◈ **गणतंत्र :** गणतंत्र शब्द का अर्थ है कि राज्य का एक निर्वाचित प्रमुख होगा जो मुख्य कार्यकारी प्रमुख होगा।
- ◈ भारत का राष्ट्रपति, ब्रिटिश राजा या रानी के विपरीत, एक वंशानुगत राजा नहीं है, बल्कि एक सीमित अवधि के लिए चुना गया व्यक्ति होता है। यह गणतंत्र का एक अनिवार्य घटक है।

5. सरकार का संसदीय स्वरूप – संसदीय प्रणाली को वेस्टमिंस्टर मॉडल उत्तरदायी या मंत्रीमण्डलीय सरकार कहा जाता है। भारतीय संविधान ने सरकार का संसदीय स्वरूप चुना।

- ◈ सरकार के संसदीय स्वरूप में कार्यपालिका विधायिका का हिस्सा होती है और मंत्रिपरिषद् की विधायिका के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी होती है। इसके अलावा, वहां बहुमत दल का शासन है और प्रधानमंत्री देश का नेता है और मुख्यमंत्री राज्य का नेता है।

6. मौलिक अधिकार – मौलिक अधिकारों को भारतीय संविधान के भाग III में शामिल किया गया है। अधिकारों के विधेयक को शामिल करने का यह विचार संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान से लिया गया है।

- ◈ अनुच्छेद 12 से 35 के मध्य 6 मौलिक अधिकारों का उल्लेख मिलता है। (44वें संविधान संशोधन 1978 के द्वारा संपत्ति के अधिकार को

मूल अधिकारों की सूची से हटाकर कानूनी/विधिक अधिकार बना दिया गया) हालाँकि, मौलिक अधिकार पूर्ण नहीं हैं। उन पर कुछ सामाजिक हितों के आधार पर कुछ प्रतिबंध लगाए जाते हैं।

7. **राज्य नीति के निदेशक सिद्धांत –** नीति-निर्देशक कार्य सामाजिक व आर्थिक लोकतंत्र को बढ़ावा देना है।
- ◈ राज्य नीति निर्देशक तत्व आयरलैण्ड के संविधान से प्रेरित है।
- ◈ नीति-निर्देशक तत्व-सामाजिक, गाँधीवादी व उदार-बौद्धिक में वर्गीकृत है। मिनर्वा मिल्स वाद (1980)- भारतीय संविधान की नींव मौलिक अधिकारों और नीति-निदेशक सिद्धांतों में संतुलन में है।

8. **मौलिक कर्त्तव्य –** मूलतः संविधान में मौलिक कर्त्तव्यों का उल्लेख नहीं है। समिति - स्वर्ण सिंह
- ◈ 42वें संविधान संशोधन 1976 द्वारा 10 तथा 86 वें संविधान संशोधन 2002 द्वारा 11वाँ मौलिक कर्तव्य शामिल किया गया।

9. **वयस्क मताधिकार –** भारतीय संविधान द्वारा भारत में संसदीय शासन प्रणाली की व्यवस्था की गयी है।
- ◈ संसदीय शासन प्रणाली के अन्तर्गत सरकार का गठन जनता के प्रत्यक्षतः निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है। प्रतिनिधियों का चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर किया जाता है।
- ◈ संविधान में कही भी जाति, धर्म, लिंग शिक्षा, क्षेत्र, भाषा, व्यवसाय आदि के आधार पर मताधिकार देने में कोई भेदभाव नही किया गया है।
- ◈ वयस्कता की उम्र पहले तो 21 वर्ष थी, परन्तु 1989 में 61वें संविधान संशोधन द्वारा उम्र घटाकर 18 वर्ष कर दी गई है।

10. **एक स्वतंत्र न्यायपालिका–** सर्वोच्च न्यायालय शीर्ष न्यायालय व मौलिक अधिकारों का रक्षक व संविधान का संरक्षक है।
- ◈ अनुच्छेद 32 के तहत मौलिक अधिकार रक्षा याचिकाएँ वर्णित है।
- ◈ जिसमें बंदी प्रत्यक्षीकरण, परमादेश, प्रतिषेध, अधिकार पृच्छा व उत्प्रेषण रिट शामिल है। भारत में एकीकृत न्यायपालिका है, जहाँ उच्चतम न्यायालय के अधीन सभी न्यायालय कार्य करते है।

11. **धर्मनिरपेक्षता –** भारत का संविधान एक धर्मनिरपेक्ष राज्य को बढ़ावा देता है, जिसमें सभी धर्मों को समान महत्त्व दिया जाता है।
- ◈ यह किसी की आस्था को आधिकारिक राज्य धर्म के रूप में मान्यता देने से भी इनकार करता है। पश्चिमी अर्थों में धर्मनिरपेक्षता राज्य और धर्म के पूर्ण पृथक्करण को दर्शाता है।

12. **एकल नागरिकता –** एकल नागरिकता भारत में एक संवैधानिक सिद्धांत है जिसके तहत सभी नागरिकों को, चाहे वे किसी भी राज्य में पैदा हुए हों या रहते हों, पूरे देश में नागरिकता के समान राजनीतिक और नागरिक अधिकार प्राप्त हैं, और उनके बीच कोई भेदभाव नहीं किया जाता है।

13. **त्रिस्तरीय सरकार –** भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताओं में से एक सरकार की त्रिस्तरीय संरचना है। मूल संविधान ने, अन्य सभी संघीय संविधानों की तरह, दोहरी राजनीति की स्थापना की और इसमें संघीय सरकार और राज्यों दोनों की संरचना और अधिकार को नियंत्रित करने वाले कानून शामिल थे। बाद में, 1992 के 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम द्वारा सरकार का तीसरा स्तर (यानी, स्थानीय) जोड़ा गया, जो दुनिया के किसी अन्य संविधान में नहीं पाया जाता है।
- ◈ 1992 के 73वें संशोधन अधिनियम ने संविधान में एक नया भाग IX और एक नई अनुसूची 11 जोड़कर पंचायतों (ग्रामीण स्थानीय सरकारों) को संवैधानिक मान्यता दी। इसी प्रकार, 1992 के 74वें संशोधन अधिनियम ने संविधान में एक नया भाग IX-ए और एक नई अनुसूची 12 जोड़कर नगर पालिकाओं (शहरी स्थानीय सरकारों) को संवैधानिक मान्यता दी।

14. **आपातकालीन प्रावधान –** भारतीय संविधान में राष्ट्रपति को किसी भी असाधारण स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए आपातकालीन प्रावधान मौजूद हैं।
1. राष्ट्रीय आपातकाल 2. राष्ट्रपति शासन 3. वित्तिय आपातकाल
- ◈ इन प्रावधानों को शामिल करने का तर्क देश की संप्रभुता, एकता, अखंडता और सुरक्षा, लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली और संविधान की रक्षा करना है।

15. **संसदीय सम्प्रभुता व न्यायिक सर्वोच्चता में समन्वयः-**
संसदीय सम्प्रभुता – ब्रिटेन, न्यायिक सर्वोच्चता - अमेरिका
- ◈ भारत में विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया (अनुच्छेद 21) जबकि अमेरिका में विधि की नियत प्रक्रिया है।
- ◈ भारतीय संविधान में प्रत्यक्षतः 'न्यायिक समीक्षा' का वर्णन नहीं है।

भारतीय संविधान की आलोचनाऐं

1. **1935 के अधिनियम की नकल**
- ◈ एन. श्रीनिवासन भारतीय संविधान की भाषा व विषयवस्तु 1935 की नकल है।
- ◈ आइवर जेनिग्स संविधान 1935 से सीधे निकलता, अधिकांश प्रावधानों के पाठ बिल्कुल उतार लिए गये है।
- ◈ पी.आर. देशमुख - संविधान अनिवार्यतः 1935 ही है बस वयस्क मताधिकार इसमें जुड़ गया है।

2. **गाँधीवादी दर्शन से दूर**
- ◈ के. हनुमथैया - यह वही संविधान है जिसे गाँधी कभी नहीं चाहते थे।

3. **उधार का संविधान :-**
- ◈ आलोचक संविधान को 'उधार की बोरी' या हॉव पॉव संविधान कहते है।
- ◈ डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि- यदि हमारा संविधान एक पैबन्दकारी है तो एक खूबसूरत -पैवन्दकारी है।

4. **भारतीयता विरोधी :-**
- ◈ के. हनुमथैया - हम वीणा या सितार चाहते हैं, लेकिन यहाँ इंग्लिश बैण्ड का संगीत सुन रहे है।
- ◈ लोकनाथ मिश्रा (संविधान सभा सदस्य) पश्चिम का दासवत अनुसरण व आत्मसमर्पण कहा।

5. **वकीलों का स्वर्ग:-**
- ◈ आइवर जेनिग्स- वकीलों का स्वर्ग कहा।
- ◈ पी.आर. देशमुख - भारी भरकम जिल्दवाला विधि ग्रंथ है।

6. **विस्तृत आकार :-**
- ◈ **आइवर जेनिग्स-** बाहरी प्रावधानों का चयन सहीं नहीं है, संविधान बहुत लंबा व जटिल है।
- ◈ **H.V. कामथ -** दुनिया में बने तमाम संविधानों में भीमकाय व हमने हाथीनुमा संविधान बनाया है।

संविधान के विभिन्न स्रोत

क्र.	भारतीय संविधान में अपनाया गया प्रावधान	स्रोत देश
1.	संसदीय शासन व्यवस्था, विधायी प्रक्रिया, विधि का शासन (Rule of Law), एकल नागरिकता, लोकसभा अध्यक्ष का पद एवं भूमिका, प्रथम-पास्ट-द-पोस्ट निर्वाचन प्रणाली	ब्रिटेन
2.	मौलिक अधिकार, स्वतंत्र न्यायपालिका, न्यायिक पुनरावलोकन (Judicial Review), संविधान की सर्वोच्चता, निर्वाचित राष्ट्रपति, महाभियोग की प्रक्रिया तथा उपराष्ट्रपति का पद	अमेरिका
3.	संघीय शासन व्यवस्था, केन्द्र एवं राज्यों के मध्य शक्तियों का विभाजन, अवशिष्ट शक्तियाँ केन्द्र को तथा राज्यपाल की नियुक्ति	कनाडा
4.	राज्य के नीति-निर्देशक तत्त्व, राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा में सदस्यों का मनोनयन तथा राष्ट्रपति के निर्वाचन की पद्धति	आयरलैण्ड
5.	समवर्ती सूची, संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक तथा प्रस्तावना की भाषा	ऑस्ट्रेलिया
6.	आपातकालीन उपबंध	जर्मनी
7.	विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया (Procedure Established by Law)	जापान
8.	गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था	फ्रांस
9.	मौलिक कर्तव्य	सोवियत संघ (USSR)
10.	संविधान संशोधन की प्रक्रिया	दक्षिण अफ्रीका

अभ्यास प्रश्न

1. **नीचे दिए गए दो वक्तव्यों को अभिकथन (A) और तर्क (R) के रूप में चिह्नित किया गया हैं। दोनों वक्तव्यों के संदर्भ में, निम्न में से कौन सा सत्य है ?**
अभिकथन (A) : भारतीय संविधान निकट रूप से ब्रिटिश संसदीय मॉडल का अनुसरण करता है।
तर्क (R) : भारत में संसद के ऊपरी सदन के पास न्यायिक शक्तियाँ हैं।
(a) (A) एवं (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) एवं (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य है, परन्तु (R) असत्य है।
(d) (A) असत्य है, परन्तु (R) सत्य है । **[c]**

2. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-**
1.भारतीय संविधान निर्माण प्रक्रिया को "नियति के साथ साक्षात्कार" की ऐतिहासिक अभिव्यक्ति कहा गया।
2."भारतीयों ने अपना संविधान बनाते समय नियति के साथ साक्षात्कार में कोई चूक नहीं की" यह टिप्पणी एक प्रसिद्ध संवैधानिक टीकाकार द्वारा की गई थी।
3.यह टिप्पणी ग्रेनविल ऑस्टिन द्वारा भारतीय संविधान सभा की कार्यप्रणाली की प्रशंसा करते हुए दी गई थी।
4.ग्रेनविल ऑस्टिन ने भारतीय संविधान को "एक सामाजिक दस्तावेज" भी कहा है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(a) केवल1,2और3 (b)केवल2,3और4
(c)केवल1और4 (d) 1, 2, 3 और 4 **[d]**

3. **संविधान सभा की प्रकृति के संबंध में निम्न कथनों पर विचार कीजिए–**
1. विभाजन के बाद यह संप्रभु निकाय बन गई।
2. यह ब्रिटिश संसद के प्रति उत्तरदायी थी।
3. इसे संविधान निर्माण की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी।
सही विकल्प चुनिए–
(a) केवल 2 (b) 1 और 3
(c) 1 और 2 (d) 1, 2 और 3 **[b]**

4. **नीचे दिए गए दो वक्तव्यों को अभिकथन और तर्क (R) के रूप में चिह्नित किया गया है। दोनों वक्तव्यों के संदर्भ में निम्न में से कौन सा सत्य है ?**
अभिकथन (A) : भारत लोकतांत्रिक है।
तर्क (R) : भारत का अपना स्वयं का संविधान है।
(a) (A) असत्य है, परन्तु (R) सत्य है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं हैं।
(d) (A) सत्य है, परन्तु (R) असत्य है। **[c]**

5. **भारत के संविधान के स्त्रोतों के सन्दर्भ में, निम्नांकित में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है -**
(a) कानून निर्माण की प्रक्रिया - ग्रेट ब्रिटेन
(b) राज्य नीति के निदेशक तत्व - आयरलैण्ड
(c) न्यायिक पुनरवलोकन - संयुक्त राज्य अमेरिका
(d) अर्द्ध संघात्मक सरकार – स्विट्जरलैण्ड **[d]**

6. **भारत की संविधान सभा में सदस्यों की संख्या की दृष्टि से सबसे बड़ी समिति कौनसी थी?**
(a) संघ संविधान समिति (b) प्रान्तीय संविधान समिति
(c) संघ शक्ति समिति (d) मौलिक अधिकारों, अल्पसंख्यकों और जनजातीय एवं बहिष्कृत क्षेत्रों पर सलाहकार समिति **[d]**

7. **निम्नलिखित में से कौन सी भारतीय संविधान की एक मुख्य विशेषता नहीं है -**
(a) विभिन्न स्रोतों से लिए गये प्रावधान
(b) दोहरी नागरिकता का प्रावधान
(c) सबसे लंबा लिखित संविधान
(d) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार **[b]**

8. **भारतीय संविधान के प्रावधान एवं स्रोत के सुमेलित नहीं हैं-**
(a) विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया - जापान
(b) समवर्ती सूची - कनाडा
(c) आपातकालीन प्रावधान - जर्मनी
(d) मौलिक अधिकार - यू.एस.ए. **[b]**

9. **भारतीय संविधान की कौनसी विशेषताएँ अमेरिका (USA) के संविधान से ली गई है?**
1. राष्ट्रपति पर महाभियोग 2. सुदृढ़ केन्द्रीय व्यवस्था के साथ संघवाद
3. उपराष्ट्रपति का पद 4. न्यायपालिका की स्वतंत्रता
(a) 1, 3, 4 (b) 1, 2, 4
(c) 1, 4 (d) 2, 3 **[a]**

10. **भारतीय संविधान की विशेषता एवं उनके विदेशी स्रोत को सुमेलित कीजिए-**

A. संघीय प्रणाली	**1. ऑस्ट्रेलिया**
B. उपराष्ट्रपति	**2. ब्रिटेन**
C. समवर्ती सूची	**3. कनाडा**
D. संसदीय विशेषाधिकार	**4. संयुक्त राज्य अमरीका**

(a) A-2, B-1, C-4, D-3 (b) A-2, B-4, C-1, D-3
(c) A-1, B-3, C-4, D-2 (d) A-3, B-4, C-1, D-2 **[d]**

11. **"भारत का संविधान बहुत लंबा, बहुत कठोर, बहुत आगे है।" यह किसने कहा?**
(a) आइवर जैनिंग्स (b) मॉरिस जोन्स
(c) ग्रानविले ऑस्टिन (d) के. सी. व्हेयर **[a]**

12. **भारतीय संविधान की विशेषता एवं सत्संबंधी प्रावधान/न्यायिक निर्वचन के त्रुटिपूर्ण युग्म को पहचानिए-**
(a) गणतंत्रवाद = निर्वाचित राष्ट्रपति
(b) लोकतंत्र = सार्वभौम वयस्क मताधिकार
(c) संघवाद = संसद की सर्वोच्चता
(d) संविधान की कठोरता = मूल ढाँचा सिद्धांत **[a]**

13. **संविधान सभा में भाषायी बहस के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए**
1. हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया।
2. देवनागरी लिपि को राजभाषा के लिए स्वीकार किया गया।
3. अंग्रेज़ी को अस्थायी रूप से सहायक भाषा रखा गया।
सही विकल्प चुनिए
(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3 **[b]**

14. **निम्नांकित में से, भारतीय संविधान की कौन-सी विशेषता स्वरूप में सच्चे तौर पर 'संघात्मक' नहीं है?**
(a) शासकीय शक्तियों का वितरण (b) लिखित संविधान
(c) एकीकृत न्यायपालिका (d) न्यायिक पुनरवलोकन **[c]**

15. **"अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई. को एतद्द्वारा इस संविधान को....... करते हैं।" संविधान की उद्देशिका में प्रयुक्त शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ।**
(a) अंगीकृत, अधिनियमित और परिरक्षित
(b) संरक्षित, प्रतिरक्षित और अधिनियमित
(c) अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित
(d) परिरक्षित, संरक्षित और प्रतिरक्षित **[c]**

♦♦♦♦

भारतीय अर्थव्यवस्था

बजट निर्माण 01

बजट परिचय

1. संविधान में 'बजट' शब्द का उल्लेख नहीं है।
2. संविधान के अनुच्छेद 112 में इसे 'वार्षिक वित्तीय विवरण (Annual Financial Statement)' कहा गया है।
3. राज्य सरकार के लिए इसका प्रावधान अनुच्छेद 202 में है।
4. बजट आगामी वित्तीय वर्ष के लिए सरकार की अनुमानित आय एवं व्यय का विवरण होता है।
5. इसमें उपलब्ध संसाधनों का प्राथमिकताओं के अनुसार आवंटन किया जाता है।

बजट का इतिहास

वर्ष	विवरण
18 फरवरी 1860	भारत का पहला बजट जेम्स विल्सन ने (लॉर्ड कैनिंग के समय) प्रस्तुत किया।
26 नवम्बर 1947	स्वतंत्र भारत का पहला बजट आर.के. षणमुखम चेट्टी ने प्रस्तुत किया।
28 फरवरी 1950	गणतंत्र भारत का पहला बजट जॉन मथाई ने प्रस्तुत किया।
1955-56 से	सी. डी. देशमुख के प्रयास से बजट हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रकाशित होने लगा।

महत्वपूर्ण तथ्य-

1. वित्तीय वर्ष - 1 अप्रैल –31 मार्च
2. बजट तैयार करने का कार्य वित्त मंत्रालय करता है।
3. वित्त मंत्रालय का प्रमुख वित्त मंत्री होता है।
4. वित्त मंत्री प्रतिवर्ष लोकसभा में बजट प्रस्तुत करता है।
5. 2017-18 से बजट प्रस्तुत करने की तिथि बदलकर फरवरी के प्रथम कार्य दिवस कर दी गई। इससे पहले इसे फरवरी के अंतिम कार्य दिवस पर प्रस्तुत किया जाता था।

महत्वपूर्ण शब्दावली

- ◈ भारत में पहला बजट 18 फरवरी, 1860 को प्रस्तुत किया गया जिसका श्रेय लॉर्ड कैनिंग के कार्यकाल में कार्यरत वित्तीय सदस्य **जेम्स विल्सन** को जाता है।
- ◈ स्वतंत्रता के बाद देश का पहला बजट पहले वित्त मंत्री **आर.के षणमुखम चेट्टी** के द्वारा 26 नवंबर, 1947 को पेश किया।
- ◈ भारतीय गणतंत्र की स्थापना के बाद पहला बजट 28 फरवरी, 1950 को **जॉन मथाई** ने पेश किया था।
- ◈ वर्ष 1955-56 से पूर्व बजट केवल अंग्रेजी में छपता था, किंतु C.D देशमुख जी ने इसे हिंदी में छापने के लिए कहा, जिसके बाद से आज तक बजट दोनों भाषा (अंग्रेजी व हिंदी) में छपता है।
- ◈ **वित्तीय वर्ष (Financial Year) -** भारत में वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से प्रारम्भ व 31 मार्च को समाप्त होता है।
- ◈ **वित्त मंत्रालय (Finance Ministry) -** भारत में बजट निर्माण करने का उत्तरदायित्व वित्त मंत्रालय को सौंपा गया है। वित्त मंत्रालय का प्रमुख वित्त मंत्री होता है।
- ◈ **वित्तमंत्री (Finance Ministry) -** वित्तमंत्री द्वारा प्रतिवर्ष लोकसभा में बजट प्रस्तुत किया जाता है।
- ◈ वित्तीय वर्ष 2017-18 से बजट प्रस्तुत करने की तिथि में बदलाव करके **फरवरी** के पहले सप्ताह में कर दिया गया, इससे पहले फरवरी के अंतिम कार्य दिवस को बजट प्रस्तुत किया जाता था।
- ◈ **वित्त विधेयक –** नये करों को लागू करने, पुराने करों में घटते-बढ़ते या उन्हें यथावत् रखने के बारे में सरकारी प्रस्ताव वित्त विधेयक कहलाता है। संविधान के अनुच्छेद-110 के अनुसार वित्त विधेयक एक धन विधेयक है।
- ◈ **आकस्मिक कोष -** अप्रत्याशित और आकस्मिक खर्च के लिए संसद से सरकार यह आकस्मिक कोष स्वीकार कराती है, जिस पर प्रतिवर्ष संसद की अलग स्वीकृति की आवश्यकता नहीं होती है। रकम की निकासी के बाद में संसद की स्वीकृति प्राप्त कर ली जाती है और खर्च की गई धनराशि निधि में वापस जमा कर दी जाती है। इस पर राष्ट्रपति का नियंत्रण होता है।
- ◈ **अनुदान माँग -** बजट में अलग-अलग विभागों की अपने विकास और कार्य संचालन पर व्यय किए जाने वाले माँग को अनुदान माँग कहते हैं।
- ◈ **कटौती प्रस्ताव -**संसद सदस्यों द्वारा बजट में शामिल खर्च को कम करने के लिए जो प्रस्ताव पेश किए जाते हैं, उन्हें कटौती प्रस्ताव कहते हैं। इन प्रस्तावों का असली उद्देश्य बजट के उस भाग पर विस्तार से बहस करना होता है। यदि कोई कटौती प्रस्ताव सरकार की इच्छा के विपरीत पारित हो जाए तो उसका सरकार के विरुद्ध अविश्वास माना जाता है।
- ◈ **लेखानुदान -**पिछला बजट 31 मार्च को समाप्त हो जाता है इसके बाद उसे नहीं बढ़ाया जा सकता। इसलिए संसद अस्थायी रूप से सरकार को व्यय के लिए अग्रिम धनराशि देती है जिसे लेखानुदान कहते हैं।
- ◈ **बजट सत्र (Budget Session) -** फरवरी माह के दूसरे या तीसरे सप्ताह में सोमवार से संसद का सत्र प्रारम्भ होता है, इस सत्र में आगामी वित्तीय वर्ष का अनुमानित बजट प्रस्तुत किया जाता है इसलिए इस सत्र को बजट सत्र कहा जाता है।
- ◈ **बजट भाषण (Budget Speech) -** वित्त मंत्री द्वारा लोक सभा में बजट प्रस्तुत करते समय जो भाषण दिया जाता है उसे बजट भाषण कहते हैं।
- ◈ **बजट टीम -** बजट निर्माण की पूरी जिम्मेदारी वित्त मंत्रालय की होती है, इस कार्य में वित्त मंत्रालय के अधीनस्थ विभाग, CAG, प्रशासनिक मंत्रालय भी सहयोग करते हैं।
- ◈ **लेखा-अंकेक्षण -** कंट्रोलर जनरल ऑफ एकाउन्ट्स (CGA) संघ सरकार के लेखों का उचित तथा वैज्ञानिक ढंग से संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप रख-रखाव सुनिश्चित करता है।
- ◈ **वार्षिक वित्तीय विवरण -** संविधान के अनुच्छेद-112 के तहत भारत सरकार की अनुमानित प्राप्तियों और व्यय का विवरण संसद के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।
- ◈ **वार्षिक वित्तीय विवरण में सरकार की प्राप्तियों और अदायगियों को तीन भागों में वर्गीकृत किया जाता है-**
  (i) संचित/समेकित निधि - अनुच्छेद-266(1)
  (ii) आकस्मिकता निधि - अनुच्छेद -267
  (iii) लोक लेखा - अनुच्छेद -266(2)

बजट सूचनाएँ -

1.आगामी वर्ष के लिए बजट अनुमान।
2.चालू वर्ष का बजट और संशोधित आँकड़े।

बजट के भाग -

- ◈ 1. आय संबंधी 2. व्यय संबंधी
- ◈ वित्त मंत्रालय संसद में प्रस्तुत करने के लिए एक नहीं बल्कि दो विवरण पत्र तैयार करता है-
  1. वार्षिक वित्तीय विवरण पत्र
  2. अनुदानों की माँगे
- ◈ संविधान के अधीन, बजट में राजस्व खाते के व्यय को अन्य व्यय से अलग दिखाना होता है इसलिए सरकार का बजट दो भागों में बँटा होता है-
  1. राजस्व बजट 2. पूँजी बजट

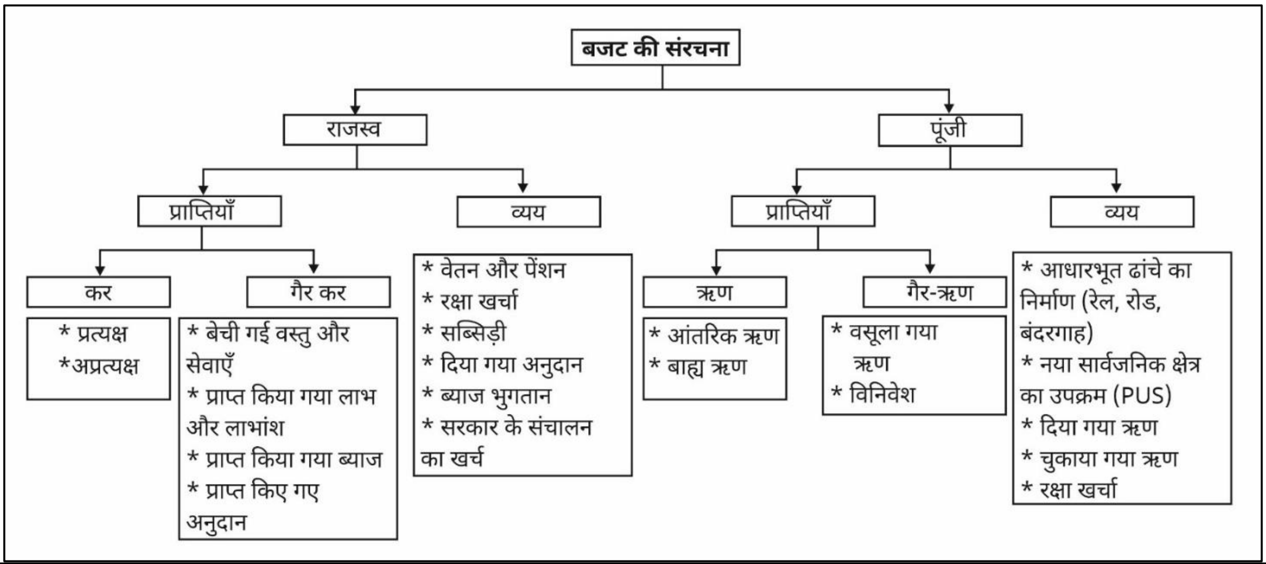

बजट खाते	
खाता	**विवरण**
1.राजस्व खाता	राजस्व प्राप्तियाँ एवं राजस्व व्यय
2.पूँजीगत खाता	पूँजीगत प्राप्तियाँ, पूँजीगत व्यय, परिसंपत्तियाँ एवं देयताएँ
3.सार्वजनिक ऋण खाता	सरकार द्वारा लिए गए ऋण का लेखा

बजट प्रक्रिया (Budget Process)	
चरण	**विवरण**
1. बजट का प्रस्तुतिकरण	बजट संसद में **बजट भाषण** के साथ प्रस्तुत किया जाता है। बजट भाषण के दो भाग होते हैं- 1.देश की आर्थिक स्थिति का सामान्य सर्वेक्षण 2.आगामी वित्त वर्ष के कराधान (Taxation) प्रस्ताव
2. सामान्य चर्चा	बजट प्रस्तुत होने के बाद दोनों सदनों में सामान्य चर्चा होती है। इस चरण में बजट की समग्र नीतियों पर विचार किया जाता है।
3. विभागीय स्थायी समितियों द्वारा परीक्षण	सामान्य चर्चा के बाद संसद लगभग **3–4 सप्ताह** के लिए स्थगित रहती है। इस अवधि में विभागीय स्थायी समितियाँ **अनुदान की मांगों** की विस्तृत समीक्षा कर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करती हैं।

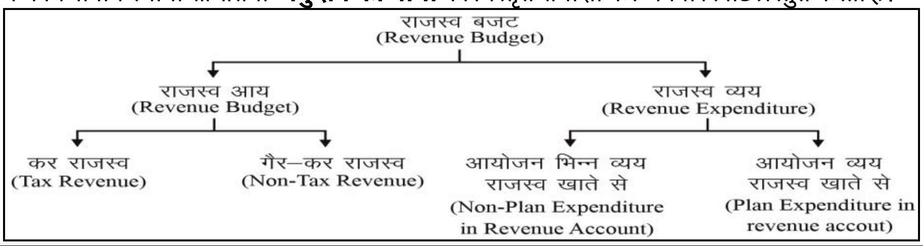

4. अनुदान की मांगों पर मतदान	लोकसभा विभागीय समितियों की रिपोर्ट के आधार पर विभिन्न मंत्रालयों की **अनुदान मांगों** पर मतदान करती है।
5. विनियोग विधेयक	भारत की **संचित निधि** से धन निकालने की वैधानिक अनुमति हेतु विनियोग विधेयक पारित किया जाता है।
6. वित्त विधेयक (Finance Bill)	सरकार के वार्षिक **कर एवं वित्तीय प्रस्तावों** को कानूनी रूप देने हेतु वित्त विधेयक पारित किया जाता है।

बजट के प्रकार (Types of Budget)	
प्रकार	**मुख्य तथ्य**
1. राजस्व बजट (Revenue Budget)	इसमें **राजस्व प्राप्तियाँ** एवं **राजस्व व्यय** शामिल होते हैं।
2. पूँजीगत बजट (Capital Budget)	इसमें **पूँजीगत प्राप्तियाँ** एवं **पूँजीगत व्यय** शामिल होते हैं।

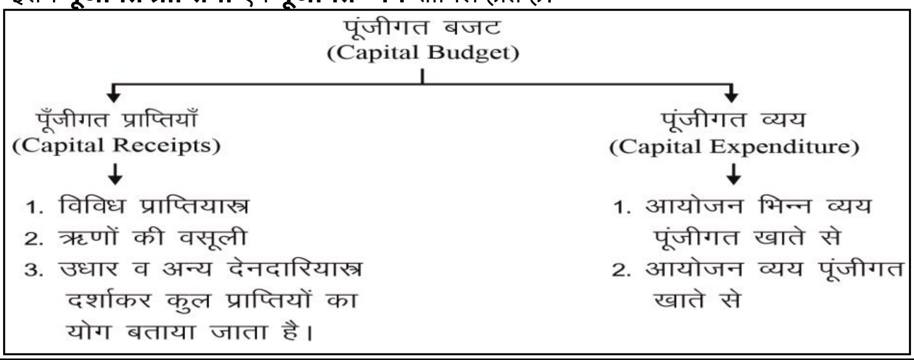

3. संतुलित बजट (Balanced Budget)	कुल आय = कुल व्यय **सूत्र:** आय = व्यय
4. बचत का बजट (Surplus Budget)	कुल आय > कुल व्यय
5. घाटे का बजट (Deficit Budget)	कुल आय < कुल व्यय
6. वार्षिक बजट (Annual Budget)	प्रत्येक वित्त वर्ष के लिए सरकार अनुमानित आय-व्यय का बजट प्रस्तुत करती है। सामान्यतः **फरवरी** में प्रस्तुत किया जाता है।
7. पूरक बजट (Supplementary Budget)	वित्त वर्ष के दौरान अतिरिक्त धन की आवश्यकता होने पर संसद में प्रस्तुत किया जाता है।
8. अंतरिम बजट (Interim Budget)	**लोकसभा चुनाव वर्ष** में कार्यवाहक सरकार द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। नई सरकार बाद में पूर्ण बजट प्रस्तुत करती है।
9. लेखानुदान (Vote on Account)	सीमित अवधि के आवश्यक सरकारी खर्च हेतु संसद से अनुमति प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इसमें केवल **व्यय की स्वीकृति** ली जाती है।
10. आम बजट (General Budget)	सरकार की वार्षिक आय-व्यय तथा आगामी वर्ष की वित्तीय एवं आर्थिक नीतियों का विवरण।
11. रेल बजट (Railway Budget)	**1924** से आम बजट से अलग प्रस्तुत किया गया। आधार: **सर विलियम एकवर्थ समिति (1920–21)** की सिफारिश। **2016** में **विवेक देवराय समिति** की सिफारिश पर पुनः आम बजट में शामिल करने का निर्णय। **2017–18** से रेल बजट का **सामान्य बजट में विलय** कर दिया गया। **रेल बजट 2026–27-** **रिकॉर्ड Capex** –₹2,93,030 करोड़। **GBS (बजटीय सहायता)** –₹2,78,030 करोड़। **7 नए हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर** –मुंबई-पुणे, पुणे–हैदराबाद, हैदराबाद–बेंगलुरु, हैदराबाद–चेन्नई, चेन्नई–बेंगलुरु, दिल्ली–वाराणसी, वाराणसी–सिलीगुड़ी। **कवच 4.0** –स्वदेशी Automatic Train Protection System का विस्तार। **रेल नेटवर्क विस्तार** –लगभग **3,500 किमी** नई रेलवे लाइनें।

बजट समितियाँ

बजट समितियाँ -

1. आंकलन समिति –

- लोक सभा के नियम 310 के तहत नियुक्त 30 सदस्य समिति जिसकी नियुक्ति लोकसभा करती है।
- इसकी रिपोर्ट पर सदन में बहस नहीं होती है।
- **कार्य-** मितव्ययता, संगठन में सुधार, कुशलता, प्रशासनिक सुधार लाने के लिए समय-समय पर राय देना।
- प्रशासनिक कुशलता तथा मितव्ययता लाने के लिए वैकल्पिक नीति का सुझाव देना।
- परीक्षण करना कि अनुमान में निहित नीति सीमा के भीतर रकम खर्च हुई है।
- पूरे वित्तीय वर्ष के दौरान समय-समय पर अनुमानों का परीक्षण करती है तथा प्रगति के संबंध में सदन को सूचित करती है।

2. विभागीय स्थाई समिति-

- बजट प्रस्तावों तथा बिलों का गहराई से अध्ययन करना एवं सरकारी नीतियों तथा कार्यक्रमों के मूल्यांकन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाना।
- **कार्य-** विभिन्न मंत्रालयों/विभागों की अनुदान माँगों पर विचार करना तथा राष्ट्रीय आधारभूत दीर्घकालीन नीति प्रपत्रों पर विचार करना।

3. लोक लेखा समिति-

- लोक लेखा समिति भारत सरकार के खर्चों की लेखा परीक्षा करने वाली समिति है।
- इसका गठन भारत शासन अधिनियम, 1919 के अंतर्गत पहली बार वर्ष 1921 में हुआ।
- वर्तमान में लोक-लेखा समिति में सदस्यों की संख्या 22 (15 लोक सभा + 7 राज्य सभा) है तथा इसका कार्यकाल 1 वर्ष का होता है।
- **कार्य-** CAG के वार्षिक प्रतिवेदनों की जाँच प्रमुख है।
- जिन क्षेत्रों तथा कार्यों के लिए सरकार द्वारा धन आवंटित किया गया है, व्यय भी उन्हीं क्षेत्रों में किया जा रहा है अथवा नहीं।
- किसी वित्तीय वर्ष में किसी भी सेवा के मद में खर्च राशि की जाँच करना यदि वह राशि उस मद में खर्च करने के लिए स्वीकृत राशि से अधिक है।

4. सार्वजनिक उद्यम समिति –

- सार्वजनिक उद्यमों के माध्यम से समेकित निधि से बहुत अधिक राशि में व्यय की जाती हैं, इस पर नियंत्रण हेतु सार्वजनिक उद्यम समिति का गठन किया गया।
- **कार्य –** समिति सार्वजनिक उद्यमों के लेखों तथा CAG प्रतिवेदनों की समीक्षा करती है।

बजट घाटा

- जब सरकार का **कुल सार्वजनिक व्यय** उसकी **कुल सार्वजनिक प्राप्तियों (आय)** से अधिक हो जाता है, तो उसे **बजट घाटा** कहते हैं।

1. बजटीय घाटा (Budgetary Deficit)-

- सरकार के **कुल सार्वजनिक व्यय** एवं **कुल सार्वजनिक प्राप्तियों** (राजस्व प्राप्तियाँ + पूंजीगत प्राप्तियाँ) के बीच का अंतर **बजटीय घाटा** कहलाता है।

सूत्र बजटीय घाटा = कुल सार्वजनिक व्यय –कुल सार्वजनिक

- चक्रवर्ती समिति (1985) की सिफारिश के बाद भारत सरकार ने **बजटीय घाटे** की अवधारणा का व्यावहारिक उपयोग समाप्त कर दिया, क्योंकि इसकी पूर्ति ट्रेजरी बिलों द्वारा की जाती थी।

2. राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit)

- सरकार के **कुल व्यय** तथा **राजस्व प्राप्तियाँ एवं गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्तियों** के बीच का अंतर **राजकोषीय घाटा** कहलाता है।
- यह बताता है कि सरकार को अपने व्यय की पूर्ति हेतु **कुल कितना उधार लेना पड़ेगा।**

सूत्र- राजकोषीय घाटा = कुल व्यय –(राजस्व प्राप्तियाँ + गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्तियाँ)

- वित्त वर्ष **2025–26** में राजकोषीय घाटा **GDP का 4.4%** रहा।
- वित्त वर्ष **2026–27** के लिए राजकोषीय घाटा **GDP का 4.3%** रखने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

3. राजस्व घाटा (Revenue Deficit)

- जब सरकार का **राजस्व व्यय**, उसकी **राजस्व प्राप्तियों** से अधिक हो जाता है, तो उसे **राजस्व घाटा** कहते हैं।
- यह दर्शाता है कि सरकार अपने **दैनिक/सामान्य प्रशासनिक खर्चों** की पूर्ति के लिए भी उधार ले रही है।
- **सूत्र - राजस्व घाटा = राजस्व व्यय –राजस्व प्राप्तियाँ**
- वित्त वर्ष **2025–26** में राजस्व घाटा **GDP का 0.8%** रहा।
- वित्त वर्ष **2026–27** के लिए राजस्व घाटा **GDP का 0.7%** रखने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

4. प्राथमिक घाटा (Primary Deficit)

- **राजकोषीय घाटे** में से **ब्याज भुगतान (Interest Payment)** घटाने पर **प्राथमिक घाटा** प्राप्त होता है।
- यह बताता है कि **पुराने ऋणों पर ब्याज भुगतान को छोड़कर**, चालू वर्ष के खर्चों की पूर्ति के लिए सरकार को कितना उधार लेना पड़ेगा।
- **सूत्र - प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा –ब्याज भुगतान**

बजट 2026–27

- कुल सरकारी व्यय का लगभग **26% भाग ब्याज भुगतान** पर व्यय होने का अनुमान है।
- इसलिए प्राथमिक घाटे को नियंत्रित रखना **राजकोषीय अनुशासन (Fiscal Discipline)** के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

5. मौद्रिक घाटा (Monetized Deficit)

- राजकोषीय घाटे का वह भाग जिसकी पूर्ति **भारतीय रिजर्व बैंक (RBI)** द्वारा नई मुद्रा सृजित करके अथवा सरकारी प्रतिभूतियाँ खरीदकर की जाती है, **मौद्रिक (मुद्रीकृत) घाटा** कहलाता है।

सूत्र- मौद्रिक घाटा = RBI द्वारा वित्तपोषित राजकोषीय घाटा

- वर्तमान में **FRBM अधिनियम** के अंतर्गत भारत सरकार प्रत्यक्ष घाटा मुद्रीकरण (Deficit Monetisation) से बचती है।
- सरकार मुख्यतः **बाजार उधारी (Market Borrowing)** तथा **राजकोषीय सुदृढ़ीकरण** की नीति अपनाती है।
- इसलिए वर्तमान समय में मौद्रिक घाटे का व्यावहारिक महत्व अत्यंत सीमित है।

केंद्रीय बजट 2026–27

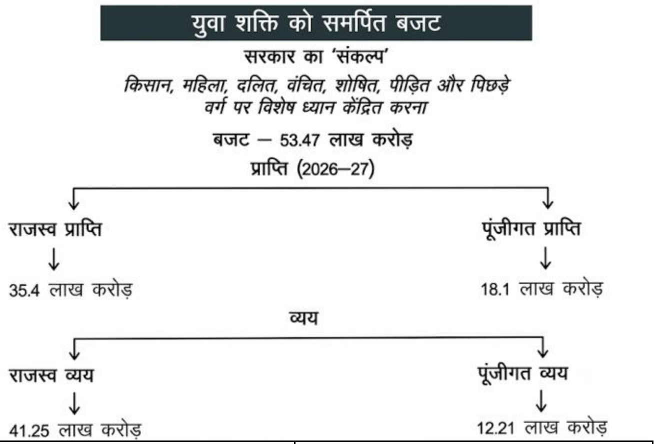

	घाटे की प्रवृत्ति	
GDP के प्रतिशत के रूप में	**2025–26**	**2026–27**
राजस्व घाटा	1.5 प्रतिशत	1.5 प्रतिशत
प्रभावी राजस्व घाटा	0.6 प्रतिशत	0.3 प्रतिशत
राजकोषीय घाटा	4.4 प्रतिशत	4.3 प्रतिशत
प्राथमिक घाटा	0.80 प्रतिशत	0.70 प्रतिशत
ऋण : GDP अनुपात	56.1 प्रतिशत	55.6 प्रतिशत

केंद्रीय बजट -

- केंद्रीय वित्त मंत्री द्वारा 1 फरवरी 2026 को संसद के कर्तव्य भवन में प्रस्तुत पहला बजट। बजट की थीम –विकसित भारत @2047।

मार्गदर्शक सिद्धांत-

- दुविधा के बजाय कार्रवाई (Action over Ambiguity)
- नारेबाजी के बजाय सुधार (Reforms over Rhetoric)
- लोकलुभावन के बजाय जनकल्याण (Welfare over Populism)

उद्देश्य-

- आर्थिक विकास को गति देना, युवाओं की क्षमता निर्माण
- समावेशी एवं संतुलित विकास

बजट के तीन कर्तव्य

कर्तव्य	मुख्य उद्देश्य	प्रमुख पहल/फोकस क्षेत्र
1. आर्थिक विकास को गति देना एवं धारणीय बनाना	उत्पादकता, प्रतिस्पर्धात्मकता एवं विनिर्माण को बढ़ावा देना; अर्थव्यवस्था को वैश्विक चुनौतियों के प्रति अधिक सुदृढ़ बनाना।	BioPharma Shakti, India Semiconductor Mission 2.0, Electronics Manufacturing, MSME, अवसंरचना, हाई-स्पीड रेल, CCUS, Rare Earth Corridor
2. आकांक्षाओं की पूर्ति एवं क्षमता निर्माण	युवाओं के कौशल, शिक्षा, नवाचार, रोजगार एवं मानव संसाधन का विकास करना।	AVGC Labs, National Institute of Hospitality, Khelo India Mission, Medical Value Tourism, STEM में बालिकाओं को प्रोत्साहन
3. सबका साथ, सबका विकास	सभी क्षेत्रों एवं समाज के प्रत्येक वर्ग तक विकास का लाभ पहुँचाना तथा समावेशी विकास सुनिश्चित करना।	Bharat-VISTAAR, SHE Marts, NIMHANS-2, Buddhist Circuit, Purvodaya, Divyang Sahara Yojana

प्रमुख घोषणाएँ

विनिर्माण एवं उद्योग

पहला कर्तव्य

आर्थिक संवृद्धि को तेज और सतत् बनाए रखना।

सात रणनीतिक क्षेत्र

1. बायोफार्मा शक्ति मिशन

- यह ज्ञान प्रौद्योगिकी और नवाचार के माध्यम से स्वास्थ्य देखभाल को बेहतर बनाने की रणनीति है।
- **उद्देश्य :-** भारत को वैश्विक बायोफार्मा विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करना।
- बायोलॉजिक्स और बायोसिमिलर के घरेलू उत्पादन हेतु पारितंत्र का निर्माण करना।
- **बजट प्रावधान :-** आगामी 5 वर्ष में 10 हजार करोड़ का निवेश।
- 1000 से अधिक मान्यता प्राप्त इंडिया क्लीनिकल ट्रायल साइटों का नेटवर्क तैयार करना।
- भारत को वैश्विक बायोफार्मा हब बनाना
- 3 नए NIPER एवं 7 संस्थानों का उन्नयन

2. इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन 2.0

- Semiconductor Equipment एवं Supply Chain को बढ़ावा
- उद्योग आधारित R&D एवं कौशल विकास

3. इलेक्ट्रॉनिक्स घटक निर्माण

- **घोषण की तिथि:-** 8 अप्रैल, 2025
- **वित्तीय बजट (परिव्यय):-** शुरुआत में 22,919 करोड़ रुपये (लगभग 2.7 बिलियन डॉलर)। केंद्रीय बजट 2026-27 में इसे बढ़ाकर 40,000 करोड़ कर दिया गया।
- **योजना की अवधि:-** 6 वर्ष (जिसमें 1 वर्ष की अतिरिक्त वैकल्पिक स्थापना अवधि शामिल है।)
- **मुख्य उद्देश्य :-** भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स पुर्जों के निर्माण के लिए एक मजबूत ओर आत्मनिर्भर इकोसिस्टम बनाना।
- **विशेषताएँ:-**
- देश और विदेश दोनों जगह से निवेश आकर्षित करना और देश के भीतर उत्पादों का मूल्यवर्धन बढ़ाना।
- विश्व स्तर पर इलेक्ट्रॉनिक्स व्यापार में भारत को एक प्रमुख देश के रूप में स्थापित करना।
- देश के तकनीकी ढांचे को और मजबूत करने के लिए यह योजना 'इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन' (ISM) के साथ मिलकर काम करेगी।

4. रेयर अर्थ कॉरिडोर

- **उद्देश्य :-**
- खनन, प्रसंस्करण,अनुसंधान और विनिर्माण को बढ़ावा देने हेतु खनिज संपन्न राज्यों को प्रोत्साहन देना।
- देश में रेयर अर्थ खनिज की आपूर्ति श्रृंखला के मजबूत करना व आयात पर निर्भरता कम करना।
- क्षेत्र :- आंध्रप्रदेश, ओडिशा, केरल और तमिलनाडु।
- Rare Earth Permanent Magnets (REPM) उत्पादन

5. तीन केमिकल पार्क

- **उद्देश्य :-**
- घरेलू रासायनिक उत्पादन को बढ़ाकर आयात पर निर्भरता कम करना।
- विनिर्माण परितंत्र को मजबूत कर भारत को वैश्विक विनिर्माण हब बनाना।

6. पूंजी सामान क्षमता मजबूत करना:-
इसके लिए 2 योजना शुरू की जाएगी।

(i) निर्माण संवर्धन एवं अवसंरचना उपकरण योजना:-

उद्देश्य :-

- उच्च मूल्य और प्रौद्योगिकी के लिहाज से उन्नत निर्माण, अवसंरचना और उपकरण के घरेलू विनिर्माण को मजबूत करना।
- इसमें फायरफाइटिंग उपकरण, लिफ्ट, सुरंग खोदने वाली मशीन जैसे- भारी मशीनें शामिल होती है।

2. कंटेनर विनिर्माण सहायाता योजना:-

- बजट और अवधि:- अगले 5 वर्षों के लिए कुल 10,000 करोड़ रुपये का आवंटन।
- भारत में विश्व स्तर का कंटेनर निर्माण इकोसिस्टम स्थापित करना। (अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का लगभग 66% या दो-तिहाई हिस्सा कंटेनर कार्गो से होता है।)
- वर्तमान में भारत लगभग 2 मिलियन (20 लाख) खाली कंटेनर आयात करता है। यह योजना इस निर्भरता को कम करेगी और देश की सप्लाई-चेन को मजबूत बनाएगी।
- अगले 10 वर्षों में सालाना लगभग 10 लाख टीईयू (Twenty-foot Equivalent Unit) कंटेनर बनाने की घरेलू क्षमता हासिल करना।
- इस योजना से लगभग 1.07 लाख करोड़ रुपये का बाजार मूल्य उत्पन्न होने की उम्मीद है।
- लगभग 3,000 प्रत्यक्ष औश्र 50,000 से अधिक अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

(iii) हाई टेक टूल रूल – CPSEs (Central Public Sector Enterprises) द्वारा 2 स्थानों पर स्थापित किए जाएंगे।

- यह डिजिटल रूप से सक्षम स्वचालित सेवा ब्यूरो के रूप में कार्य करेंगे।
- कम लागत पर उच्च गुणवत्ता वाले कल-पूर्जों का बड़े पैमाने व स्थानीय स्तर पर निर्माण, डिजाईन, परीक्षण और विनिर्माण करना।

7. एकीकृत वस्त्र कार्यक्रम

- राष्ट्रीय फाइबर योजना
- समर्थ 2.0

MSME सुधार

- 10,000 करोड़ का SME Growth Fund
- आत्मनिर्भर भारत कोष में ₹2,000 करोड़ अतिरिक्त
- Champion MSME विकसित करने पर बल

अवसंरचना (Infrastructure)

Growth Connector

- 7 नए हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर
- नए Dedicated Freight Corridors
- 20 राष्ट्रीय जलमार्ग
- Coastal Cargo Promotion Scheme
- Seaplane VGF Scheme
- Infrastructure Risk Guarantee Fund
- City Economic Region (CER) प्रत्येक CER हेतु ₹5,000 करोड़ (5 वर्ष)

अभ्यास प्रश्न

1. बजट के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. भारतीय संविधान में 'बजट' शब्द का प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं किया गया है।
2. संविधान के अनुच्छेद 112 में इसे वार्षिक वित्तीय विवरण कहा गया है।
3. राज्य सरकार के वार्षिक वित्तीय विवरण का प्रावधान अनुच्छेद 202 में किया गया है।
(a) केवल 1 और 2 सही हैं। (b) केवल 2 और 3 सही हैं।
(c) केवल 1 और 3 सही हैं। (d) 1, 2 और 3 सही हैं। **[d]**

2. बजट के इतिहास के संबंध में निम्नलिखित का सुमेल कीजिए–

सूची-I	सूची-II
I. भारत का प्रथम बजट	1. जॉन मथाई
II. स्वतंत्र भारत का प्रथम बजट	2. जेम्स विल्सन
III. गणतंत्र भारत का प्रथम बजट	3. आर.के. षणमुखम चेट्टी
IV. बजट का हिंदी-अंग्रेजी में प्रकाशन	4. सी.डी. देशमुख

(a) I-2, II-3, III-1, IV-4 (b) I-3, II-2, III-1, IV-4
(c) I-2, II-1, III-3, IV-4 (d) I-4, II-3, III-2, IV-1 **[a]**

3. अभिकथन (A): वित्त विधेयक संविधान के अनुच्छेद 110 के अंतर्गत धन विधेयक माना जाता है।
कारण (R): वित्त विधेयक नए कर लगाने, पुराने करों में संशोधन अथवा उन्हें यथावत रखने से संबंधित होता है।
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है। **[a]**

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. आकस्मिकता निधि अप्रत्याशित व्यय के लिए होती है।
2. इस निधि पर राष्ट्रपति का नियंत्रण होता है।
3. प्रत्येक वर्ष इसके लिए संसद से पृथक स्वीकृति आवश्यक होती है।
(a) केवल 1 सही है। (b) केवल 1 और 2 सही हैं।
(c) केवल 2 और 3 सही हैं। (d) 1, 2 और 3 सही हैं। **[b]**

5. बजट प्रक्रिया के संबंध में निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
1. सामान्य चर्चा के बाद विभागीय स्थायी समितियाँ अनुदानों की माँगों का परीक्षण करती हैं।
2. विनियोग विधेयक, वित्त विधेयक से पहले पारित किया जाता है।
3. बजट भाषण का दूसरा भाग देश की आर्थिक स्थिति का सर्वेक्षण होता है।
(a) केवल 1 सही है। (b) केवल 1 और 2 सही हैं।
(c) केवल 2 और 3 सही हैं। (d) 1, 2 और 3 सही हैं। **[b]**

6. बजट के प्रकारों के संबंध में निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
1. संतुलित बजट में कुल आय एवं कुल व्यय बराबर होते हैं।
2. बचत के बजट में कुल आय, कुल व्यय से कम होती है।
3. घाटे के बजट में कुल व्यय, कुल आय से अधिक होता है।
कूट:–
(a) केवल 1 और 2 सही हैं। (b) केवल 2 और 3 सही हैं।
(c) केवल 1 और 3 सही हैं। (d) 1, 2 और 3 सही हैं। **[c]**

7. निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन लोक लेखा समिति के संबंध में सत्य है/हैं?
1. इसका प्रथम गठन 1921 में हुआ था।
2. वर्तमान में इसमें 22 सदस्य होते हैं।
3. यह CAG की रिपोर्टों की जाँच करती है।
4. इसका कार्यकाल 5 वर्ष होता है।
(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 1, 2 और 3
(c) केवल 2, 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4 **[b]**

8. बजट घाटों के संबंध में निम्नलिखित का सुमेल कीजिए–

सूची-I	सूची-II
I. राजकोषीय घाटा	1. राजस्व व्यय –राजस्व प्राप्तियाँ
II. राजस्व घाटा	2. राजकोषीय घाटा –ब्याज भुगतान
III. प्राथमिक घाटा	3. कुल व्यय –(राजस्व प्राप्तियाँ + गैर-ऋण पूंजीगत प्राप्तियाँ)
IV. मौद्रिक घाटा	4. RBI द्वारा वित्तपोषित राजकोषीय घाटा

(a) I-3, II-1, III-2, IV-4 (b) I-1, II-3, III-2, IV-4
(c) I-3, II-2, III-1, IV-4 (d) I-4, II-1, III-3, IV-2 **[a]**

9. बजट 2026–27 के संबंध में निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
1. इसकी थीम 'विकसित भारत @2047' है।
2. नया आयकर अधिनियम, 2025 एक अप्रैल 2026 से लागू किया जाना प्रस्तावित है।
3. कर स्लैब में व्यापक परिवर्तन किए गए हैं।
(a) केवल 1 सही है। (b) केवल 2 और 3 सही हैं।
(c) केवल 1 और 2 सही हैं। (d) 1, 2 और 3 सही हैं। **[c]**

10. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. रेल बजट 1924 से आम बजट से अलग प्रस्तुत किया गया था।
2. विवेक देवराय समिति की सिफारिश पर रेल बजट का आम बजट में विलय किया गया।
3. 2017–18 से रेल बजट का पृथक प्रस्तुतीकरण समाप्त कर दिया गया।
(a) केवल 1 और 2 सही हैं। (b) केवल 2 और 3 सही हैं।
(c) केवल 1 और 3 सही हैं। (d) 1, 2 और 3 सही हैं। **[d]**

♦♦♦♦

जनस्वास्थ्य

प्राथमिक चिकित्सा की बुनियादी बाते

01

- मानव जीवन में दुर्घटनाएँ, अचानक बीमारियाँ तथा अन्य आपातकालीन परिस्थितियाँ किसी भी समय और किसी भी स्थान पर उत्पन्न हो सकती हैं। व्यक्ति घर, विद्यालय, कार्यालय, सड़क, यात्रा या किसी सार्वजनिक स्थान पर हो, संकट की स्थिति बिना किसी पूर्व चेतावनी के सामने आ सकती है।
- कुछ आपातकालीन परिस्थितियाँ साधारण होती हैं, जबकि कुछ अत्यन्त गंभीर एवं जीवन के लिए खतरा उत्पन्न करने वाली होती हैं। ऐसी परिस्थितियों में समय पर दी गई उचित सहायता किसी व्यक्ति का जीवन बचा सकती है।
- संकट की घड़ी में केवल चिकित्सक ही नहीं, बल्कि एक सामान्य नागरिक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यदि उसके पास प्राथमिक चिकित्सा (First Aid) का आवश्यक ज्ञान एवं कौशल हो तो वह घायल या बीमार व्यक्ति को तत्काल सहायता प्रदान कर सकता है।

मूल अवधारणा (Core Concept)

- प्राथमिक चिकित्सा (First Aid) का मूल उद्देश्य किसी घायल, बीमार अथवा संकटग्रस्त व्यक्ति को तत्काल सहायता प्रदान करना है, ताकि उसकी स्थिति को नियंत्रित रखा जा सके तथा विशेषज्ञ चिकित्सा सहायता उपलब्ध होने तक उसके जीवन एवं स्वास्थ्य की रक्षा की जा सके।
- कई बार प्राथमिक चिकित्सा ही जीवन और मृत्यु के बीच का निर्णायक अंतर सिद्ध होती है।

प्राथमिक चिकित्सा (First Aid)

- प्राथमिक चिकित्सा से अभिप्राय उन त्वरित एवं आवश्यक उपायों से है जो किसी व्यक्ति को दुर्घटना, चोट, जलन, विषाक्तता, अचानक बीमारी या अन्य आपातकालीन स्थिति में तत्काल राहत प्रदान करने के लिए किए जाते हैं।
- यह सहायता घटना स्थल पर उपलब्ध सीमित साधनों एवं संसाधनों का उपयोग करके दी जाती है।
- प्राथमिक चिकित्सा का उद्देश्य पीड़ित की स्थिति को स्थिर बनाए रखना, दर्द को कम करना तथा आगे होने वाली जटिलताओं को रोकना है।
- उचित समय पर दी गई प्राथमिक चिकित्सा अनेक बार गंभीर जटिलताओं को रोक देती है तथा जीवन बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- प्राथमिक चिकित्सा केवल शारीरिक सहायता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पीड़ित को मानसिक संबल एवं आत्मविश्वास भी प्रदान करती है।

प्राथमिक चिकित्सा की परिभाषा एवं अर्थ

- प्राथमिक चिकित्सा वह प्रारम्भिक सहायता है जो किसी घायल अथवा अचानक बीमार व्यक्ति को चिकित्सकीय सहायता प्राप्त होने से पूर्व प्रदान की जाती है।
- यह सहायता उपलब्ध संसाधनों, सीमित उपकरणों तथा व्यावहारिक ज्ञान के आधार पर दी जाती है।
- प्राथमिक चिकित्सा का प्रथम चरण पीड़ित की स्थिति का त्वरित मूल्यांकन (Rapid Assessment) करना होता है।
- इसके बाद ऐसे उपाय किए जाते हैं जो पीड़ित के जीवन की रक्षा करें, दर्द कम करें तथा आगे होने वाली क्षति को रोकें।
- अस्पताल पहुँचने तक दी गई यह सहायता कई बार जीवन एवं मृत्यु के बीच निर्णायक अंतर सिद्ध होती है।

उदाहरण:–

- हृदयाघात
- अत्यधिक रक्तस्राव
- साँप, बिच्छू अथवा अन्य विषैले जीवों का काटना
- ऊँचाई से गिरना
- जलना
- बेहोशी
- सड़क दुर्घटनाएँ

स्वर्णिम समय (Golden Hour)

- दुर्घटना या गंभीर चोट लगने के बाद का प्रारम्भिक एक घंटा "स्वर्णिम समय" (Golden Hour) कहलाता है।
- इस अवधि में दी गई सही प्राथमिक चिकित्सा जीवन बचाने और जटिलताओं को कम करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- चिकित्सकीय दृष्टि से यह समय सबसे अधिक संवेदनशील माना जाता है।

प्राथमिक चिकित्सा का कार्यक्षेत्र (Scope of First Aid)

- प्राथमिक चिकित्सा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है तथा इसका उपयोग दैनिक जीवन से लेकर प्राकृतिक आपदाओं तक हर प्रकार की परिस्थिति में किया जाता है।

1. **स्थिति का मूल्यांकन (Assessment)**
   - दुर्घटना अथवा आपातकाल की प्रकृति और कारणों का शीघ्र पता लगाना। यह निर्धारित करना कि कौन-सा पीड़ित सबसे अधिक गंभीर स्थिति में है।
2. **सार्वभौमिक उपयोगिता (Universal Application)**
   - घर, विद्यालय, कार्यालय, सड़क, कारखाना एवं सार्वजनिक स्थानों पर। बाढ़, भूकंप, आग, भूस्खलन, सूखा तथा अन्य प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाओं में।
   - खेल प्रतियोगिताओं, यात्राओं एवं सामुदायिक आयोजनों में।
3. **तात्कालिक हस्तक्षेप (Immediate Intervention)**
   - चिकित्सक, एम्बुलेंस या स्वास्थ्य सेवाओं के पहुँचने तक आवश्यक सहायता प्रदान करना। उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करके स्थिति को नियंत्रित रखना।
4. **सुरक्षित स्थानांतरण (Safe Transportation)**
   - घायल व्यक्ति को बिना अतिरिक्त क्षति पहुँचाए सुरक्षित रूप से अस्पताल तक पहुँचाने की व्यवस्था करना।

प्राथमिक चिकित्सा के मुख्य उद्देश्य

- प्राथमिक चिकित्सा के उद्देश्यों को सामान्यतः **3P Principle** के रूप में समझाया जाता है।

1. **जीवन की रक्षा करना (Preserve Life)**
   - पीड़ित के जीवन को सुरक्षित रखना प्राथमिक चिकित्सा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है।
2. **स्थिति को और बिगड़ने से रोकना**
   - ऐसी सभी परिस्थितियों एवं कारणों को नियंत्रित करना जो पीड़ित की स्थिति को और अधिक गंभीर बना सकते हैं।
3. **स्वास्थ्य लाभ को बढ़ावा देना**
   - पीड़ित को शारीरिक एवं मानसिक सहारा देकर शीघ्र स्वास्थ्य लाभ में सहायता करना।

प्राथमिक चिकित्सा के मूल सिद्धांत

- सबसे पहले स्वयं की सुरक्षा सुनिश्चित करें।
- दुर्घटनास्थल को सुरक्षित बनाएं।
- पीड़ित की स्थिति का त्वरित निरीक्षण करें।
- आवश्यकता पड़ने पर तुरंत सहायता एवं एम्बुलेंस बुलाएँ।
- शांतचित्त रहकर कार्य करें तथा घबराहट से बचें।
- पीड़ित को अनावश्यक रूप से हिलाने-डुलाने से बचें।

- ❖ गंभीर चोटों को प्राथमिकता दें।
- ❖ जीवन रक्षक उपायों को सबसे पहले लागू करें।
- ❖ पीड़ित को आश्वस्त करें तथा उसका मनोबल बनाए रखें।

प्राथमिक चिकित्सा का ABC सिद्धांत

A – Airway (श्वास मार्ग)
- ❖ सुनिश्चित करें कि पीड़ित का श्वास मार्ग खुला हो।
- ❖ मुँह या श्वास नली में कोई रुकावट हो तो सावधानीपूर्वक हटाएँ।

B – Breathing (श्वसन)
- ❖ जाँच करें कि पीड़ित सामान्य रूप से सांस ले रहा है या नहीं।
- ❖ आवश्यकता पड़ने पर कृत्रिम श्वसन प्रदान करें।

C – Circulation (रक्त परिसंचरण)
- ❖ नाड़ी एवं रक्तसंचार की स्थिति की जाँच करें।
- ❖ अत्यधिक रक्तस्राव होने पर उसे तुरंत नियंत्रित करें।

प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता (First Aid Provider)

- ❖ प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता वह व्यक्ति होता है जो किसी दुर्घटना, चोट, अचानक बीमारी अथवा आपातकालीन स्थिति में चिकित्सकीय सहायता उपलब्ध होने से पूर्व पीड़ित को त्वरित एवं आवश्यक सहायता प्रदान करता है।
- ❖ रेड क्रॉस सोसायटी के अनुसार प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता का मुख्य उद्देश्य जीवन बचाना, पीड़ा कम करना तथा पीड़ित को सुरक्षित अवस्था में चिकित्सा संस्थान तक पहुँचाना होता है।
- ❖ एक प्रभावी प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता के लिए डॉक्टर होना आवश्यक नहीं है, लेकिन उसे प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण, व्यावहारिक ज्ञान तथा मानवीय संवेदनाओं से युक्त होना चाहिए।

प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता के आवश्यक गुण एवं योग्यताएँ:–
1. शांत चित्त (Calmness)
2. निर्भीकता (Fearlessness)
3. तीव्र अवलोकन क्षमता (Sharp Observation)
4. त्वरित एवं उचित निर्णय क्षमता (Good Judgement)
5. सहानुभूति एवं संवेदनशीलता
6. विनम्रता एवं सहनशीलता (Politeness and Patience)
7. नेतृत्व क्षमता (Leadership Skills)
8. प्रभावी संवाद कौशल (Communication Skills)
9. तकनीकी ज्ञान एवं कौशल (Knowledge and Practical Skills)
10. शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य (Physical and Mental Fitness)
11. जिम्मेदारी एवं सेवा भावना (Sense of Responsibility)
12. आत्मविश्वास (Self Confidence)

प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता की जिम्मेदारियाँ

दुर्घटनास्थल पर पहुँचने से संबंधित
- ❖ सूचना प्राप्त होते ही यथाशीघ्र घटनास्थल पर पहुँचना।
- ❖ स्थिति का शीघ्र मूल्यांकन करना।
- ❖ आवश्यक होने पर एम्बुलेंस एवं आपातकालीन सेवाओं को सूचित करना।

सुरक्षा सुनिश्चित करना
- ❖ स्वयं की सुरक्षा को प्राथमिकता देना।
- ❖ दुर्घटनास्थल को सुरक्षित बनाना।
- ❖ बिजली, आग, गैस रिसाव, रसायन या अन्य खतरों की पहचान करना।

पीड़ित का प्राथमिक मूल्यांकन
- ❖ चेतना स्तर की जाँच करना।
- ❖ श्वसन (Breathing) की जाँच करना।
- ❖ नाड़ी (Pulse) की जाँच करना।
- ❖ रक्तस्राव की पहचान करना।
- ❖ शॉक के लक्षणों का निरीक्षण करना।

जीवन रक्षक सहायता प्रदान करना
- ❖ आवश्यक होने पर CPR देना।
- ❖ रक्तस्राव नियंत्रित करना।
- ❖ श्वास मार्ग (Airway) खुला रखना।
- ❖ घायल अंग को स्थिर रखना।
- ❖ जलन, फ्रैक्चर एवं अन्य चोटों की प्राथमिक देखभाल करना।

मानसिक सहायता प्रदान करना
- ❖ पीड़ित को सांत्वना देना।
- ❖ घबराहट कम करना।
- ❖ सकारात्मक एवं आश्वस्त करने वाली भाषा का प्रयोग करना।

भीड़ नियंत्रण
- ❖ अनावश्यक भीड़ को दूर रखना।
- ❖ पीड़ित को पर्याप्त ताजी हवा उपलब्ध कराना।
- ❖ गोपनीयता एवं सम्मान बनाए रखना।

स्थानांतरण एवं रेफरल
- ❖ आवश्यकता पड़ने पर सुरक्षित परिवहन की व्यवस्था करना।
- ❖ अस्पताल पहुँचने तक निरंतर निगरानी रखना।
- ❖ डॉक्टर को घटना तथा दिए गए उपचार का पूरा विवरण देना।

प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता द्वारा ध्यान में रखे जाने वाले सिद्धांत एवं नियम

1. प्राथमिकता का सिद्धांत (First Things First)
- ❖ ABC (Airway, Breathing, Circulation) को प्राथमिकता दें।

2. समय की महत्ता (Golden Hour Principle)
- ❖ दुर्घटना के बाद का प्रारम्भिक समय अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

3. स्वयं की सुरक्षा (Safety First)
- ❖ स्वयं घायल होकर सहायता कार्य में बाधा न बनें।

4. अचेत रोगी को कुछ न खिलाएँ-पिलाएँ
- ❖ बेहोश व्यक्ति को पानी, दूध, दवा या भोजन नहीं देना चाहिए, इससे श्वास नली अवरुद्ध हो सकती है।

5. अनावश्यक रूप से न हिलाएँ
- ❖ गलत तरीके से उठाने पर स्थायी विकलांगता हो सकती है।

6. संक्रमण नियंत्रण (Infection Prevention)
- ❖ दस्ताने एवं मास्क का उपयोग करें।
- ❖ रक्त एवं शारीरिक द्रवों के सीधे संपर्क से बचें।

7. सीमाओं को पहचानें
- ❖ अपनी क्षमता एवं प्रशिक्षण के भीतर ही कार्य करें।
- ❖ जटिल उपचार करने का प्रयास न करें।

8. गोपनीयता बनाए रखें
- ❖ रोगी की व्यक्तिगत जानकारी को गोपनीय रखें।

9. निरंतर निगरानी रखें

- श्वसन, नाड़ी एवं चेतना में होने वाले परिवर्तनों को नोट करें।

10. घबराहट नहीं फैलाएँ

प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता द्वारा विचार योग्य मुद्दे

- प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करते समय केवल तकनीकी ज्ञान ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि कानूनी (Legal), नैतिक (Ethical) तथा भावनात्मक (Emotional) पहलुओं की समझ भी आवश्यक होती है।
- कई बार सहायता करने वाले व्यक्ति के मन में यह आशंका रहती है कि यदि उपचार के दौरान कोई समस्या उत्पन्न हो गई तो उसे कानूनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।
- भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी के अनुसार, प्रशिक्षित प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता को मानवता, निष्पक्षता, स्वैच्छिक सेवा तथा उत्तरदायित्व के सिद्धांतों के अनुरूप कार्य करना चाहिए।
- वर्तमान समय में विभिन्न कानूनी प्रावधानों एवं न्यायालय के निर्देशों ने आम नागरिकों को निःस्वार्थ भाव से सहायता करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

गुड समैरिटन लॉ (Good Samaritan Law)

- "समैरिटन" शब्द का अर्थ है—वह व्यक्ति जो किसी संकटग्रस्त या घायल व्यक्ति की निःस्वार्थ भाव से सहायता करता है।
- गुड समैरिटन (Good Samaritan) वह व्यक्ति है जो बिना किसी व्यक्तिगत लाभ की अपेक्षा किए दुर्घटनाग्रस्त, घायल या बीमार व्यक्ति को आपातकालीन सहायता प्रदान करता है।
- गुड समैरिटन लॉ ऐसे सहायता करने वाले व्यक्तियों को कानूनी संरक्षण प्रदान करता है ताकि वे भयमुक्त होकर मानव सेवा कर सकें।
- यदि सहायता सद्भावना (Good Faith) एवं उचित सावधानी के साथ प्रदान की गई हो, तो अनजाने में हुई त्रुटियों के लिए सामान्यतः सहायता प्रदाता को उत्तरदायी नहीं माना जाता।

भारत में गुड समैरिटन दिशानिर्देश

(सुप्रीम कोर्ट द्वारा 30 मार्च 2016 को स्वीकृत दिशानिर्देश)

- सड़क दुर्घटना पीड़ित की सहायता करने वाले व्यक्ति को सम्मान एवं सुरक्षा प्रदान की जाएगी।
- किसी भी व्यक्ति को केवल सहायता करने के कारण पुलिस या अस्पताल द्वारा अनावश्यक रूप से परेशान नहीं किया जाएगा।
- सहायता करने वाला व्यक्ति चाहे तो अपनी पहचान गोपनीय रख सकता है।
- उसे नाम, पता या अन्य व्यक्तिगत जानकारी देने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।
- पुलिस द्वारा अनावश्यक पूछताछ नहीं की जाएगी।
- यदि वह गवाह बनना चाहे, तो उसकी सुविधा के अनुसार पूछताछ की जाएगी।
- अस्पतालों का दायित्व है कि वे दुर्घटना पीड़ित को तत्काल प्राथमिक चिकित्सा एवं आपातकालीन उपचार उपलब्ध कराएँ।
- सहायता करने वाले व्यक्ति के साथ सम्मानजनक एवं मानवीय व्यवहार किया जाना चाहिए।

प्राथमिक चिकित्सा से संबंधित कानूनी मुद्दे

1. देखभाल का कर्तव्य (Duty of Care)

- प्रत्येक प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता का नैतिक एवं व्यावसायिक दायित्व है कि वह अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार सर्वोत्तम सहायता प्रदान करे।
- सहायता करते समय सावधानी, सतर्कता तथा जिम्मेदारी का पालन किया जाना चाहिए।
- रेड क्रॉस के अनुसार सहायता का उद्देश्य पीड़ित के जीवन की रक्षा तथा स्थिति को स्थिर बनाए रखना है।

2. लापरवाही (Negligence)

- लापरवाही का अर्थ है आवश्यक सावधानी न बरतना या ऐसा कार्य करना जिससे पीड़ित को अनावश्यक हानि पहुँचे।
- यदि प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता जानबूझकर या गंभीर असावधानी से कार्य करता है, तभी उसे उत्तरदायी माना जा सकता है।
- यदि जीवन बचाने के प्रयास में उचित तकनीक का उपयोग करते हुए कोई आकस्मिक क्षति हो जाए, तो सामान्यतः उसे लापरवाही नहीं माना जाता।

उदाहरण

- CPR देते समय पसली में हल्का फ्रैक्चर हो जाना।
- रक्तस्राव रोकने के लिए दबाव डालते समय त्वचा पर निशान पड़ जाना।
- ऐसी स्थितियों में प्राथमिक उद्देश्य जीवन रक्षा माना जाता है।

3. सहमति (Consent)

सचेत रोगी की सहमति

- यदि पीड़ित सचेत एवं समझने की स्थिति में है तो उपचार प्रारम्भ करने से पहले उसकी अनुमति लेना आवश्यक है।
- इसे स्पष्ट सहमति (Expressed Consent) कहा जाता है।

अचेत रोगी की सहमति

- यदि पीड़ित बेहोश है तथा उसकी जान को खतरा है, तो सहमति को निहित सहमति (Implied Consent) माना जाता है।
- ऐसी स्थिति में जीवन रक्षक प्राथमिक चिकित्सा तुरंत प्रारम्भ की जा सकती है।

बच्चों के मामले में

- सामान्यतः माता-पिता अथवा अभिभावक की अनुमति ली जानी चाहिए।
- आपातकालीन परिस्थितियों में यदि अभिभावक उपलब्ध न हों, तो निहित सहमति के आधार पर उपचार दिया जा सकता है।

4. गोपनीयता (Confidentiality)

- रोगी की व्यक्तिगत जानकारी को गोपनीय रखना चाहिए।
- उसकी बीमारी, चोट अथवा व्यक्तिगत विवरण को सार्वजनिक नहीं करना चाहिए।
- चिकित्सा नैतिकता के अनुसार रोगी की निजता का सम्मान करना आवश्यक है।

5. अभिलेखन एवं दस्तावेजीकरण

- प्राथमिक चिकित्सा के दौरान किए गए कार्यों का संक्षिप्त रिकॉर्ड रखना उपयोगी होता है।

नैतिक मुद्दे (Ethical Issues in First Aid)

1. मानव गरिमा का सम्मान

- प्रत्येक व्यक्ति सम्मान और गरिमा का अधिकारी है।
- प्राथमिक चिकित्सा देते समय रोगी की निजता एवं आत्मसम्मान बनाए रखना चाहिए।

2. सांस्कृतिक एवं धार्मिक संवेदनशीलता

- रोगी की धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक विश्वासों तथा सामाजिक मूल्यों का सम्मान करना चाहिए।
- किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।
- उपचार प्रदान करते समय रोगी की भावनाओं का ध्यान रखा जाना चाहिए।

3. निष्पक्षता (Impartiality)

- सहायता जाति, धर्म, भाषा, लिंग, आर्थिक स्थिति या राष्ट्रीयता के आधार पर प्रभावित नहीं होनी चाहिए।
- सभी पीड़ितों को समान अवसर एवं समान सहायता मिलनी चाहिए।

4. विशेष समूहों के प्रति संवेदनशीलता

बच्चों के प्रति

- बच्चों को अतिरिक्त सुरक्षा एवं भावनात्मक सहयोग की आवश्यकता होती है।
- उनसे सरल एवं स्नेहपूर्ण भाषा में संवाद करना चाहिए।

वृद्ध व्यक्तियों के प्रति

- बुजुर्गों के साथ सम्मानजनक एवं धैर्यपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
- उनकी शारीरिक सीमाओं को ध्यान में रखना चाहिए।

दिव्यांग व्यक्तियों के प्रति

- विशेष आवश्यकताओं एवं सीमाओं को समझकर सहायता करनी चाहिए।

5. स्व-सुरक्षा एवं कर्तव्य का संतुलन

- प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता को अपनी सुरक्षा को भी प्राथमिकता देनी चाहिए।
- रेड क्रॉस के अनुसार "एक घायल सहायक किसी की सहायता नहीं कर सकता।"
- यदि घटनास्थल अत्यधिक खतरनाक हो तो विशेषज्ञ सहायता बुलानी चाहिए।

उदाहरण

- विद्युत करंट का क्षेत्र
- जहरीली गैस का रिसाव

भावनात्मक मुद्दे (Emotional Issues in First Aid)

भावनात्मक प्रतिक्रिया

- दुर्घटना या आपदा का दृश्य अत्यंत तनावपूर्ण एवं भावनात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता को भय, घबराहट एवं तनाव पर नियंत्रण रखना चाहिए।

पीड़ित को भावनात्मक सहयोग

- घायल व्यक्ति प्रायः भय, दर्द, चिंता एवं असुरक्षा का अनुभव करता है।
- ऐसे समय में आश्वस्त करने वाले शब्द अत्यंत प्रभावी होते हैं।

उदाहरण

- "आप सुरक्षित हैं।"
- "मदद रास्ते में है।"
- "हम आपकी पूरी सहायता कर रहे हैं।"

परिवार को भावनात्मक सहायता

- परिजनों को धैर्य एवं सकारात्मक जानकारी प्रदान करनी चाहिए।
- अनावश्यक घबराहट या अफवाहों से बचाना चाहिए।

तनाव प्रबंधन

- गंभीर घटनाओं के बाद स्वयं प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता को भी मानसिक तनाव हो सकता है।
- रेड क्रॉस प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानसिक स्वास्थ्य एवं तनाव प्रबंधन को भी महत्वपूर्ण माना गया है।
- आवश्यकता होने पर मनोवैज्ञानिक परामर्श प्राप्त करना चाहिए।

प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता के लिए स्वर्णिम नियम

- पहले स्वयं की सुरक्षा सुनिश्चित करें।
- स्थिति का त्वरित आकलन करें।
- जीवन रक्षक कार्यों को प्राथमिकता दें।
- शांत एवं आत्मविश्वासी बने रहें।
- पीड़ित के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करें।
- कानूनी एवं नैतिक मर्यादाओं का पालन करें।
- गोपनीयता बनाए रखें।
- समय पर चिकित्सा सहायता की व्यवस्था करें।
- किए गए उपचार का संक्षिप्त रिकॉर्ड रखें।
- सदैव "जीवन रक्षा – स्थिति को स्थिर रखना – स्वास्थ्य लाभ को बढ़ावा देना" के सिद्धांत पर कार्य करें।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- गुड समैरिटन लॉ का उद्देश्य सहायता करने वाले व्यक्ति को कानूनी सुरक्षा प्रदान करना है।
- प्राथमिक चिकित्सा के प्रमुख कानूनी मुद्दे — Duty of Care, Negligence, Consent, Documentation एवं Confidentiality।
- प्रमुख नैतिक सिद्धांत — मानव गरिमा, निष्पक्षता, सांस्कृतिक सम्मान एवं स्व-सुरक्षा।
- प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता की भावनात्मक भूमिका — पीड़ित को मानसिक संबल देना तथा भय एवं तनाव कम करना।
- रेड क्रॉस का मूल संदेश — "सुरक्षा, मानवता, निष्पक्षता और सेवा" (Safety, Humanity, Impartiality and Service)

प्राथमिक चिकित्सा पेटी (First Aid Kit)

- प्राथमिक चिकित्सा पेटी (First Aid Kit) एक विशेष बॉक्स, बैग अथवा कंटेनर होता है, जिसमें दुर्घटना, चोट, अचानक बीमारी या अन्य आपातकालीन परिस्थितियों में तत्काल सहायता प्रदान करने हेतु आवश्यक प्राथमिक उपचार सामग्री सुव्यवस्थित रूप से रखी जाती है।
- भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी के अनुसार, प्राथमिक चिकित्सा पेटी ऐसी आवश्यक वस्तुओं का संग्रह है जो चिकित्सा सहायता उपलब्ध होने से पूर्व घायल या बीमार व्यक्ति की स्थिति को स्थिर रखने तथा उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने में सहायक होती हैं।
- यह घर, विद्यालय, कार्यालय, उद्योग, खेल मैदान, वाहन तथा सार्वजनिक स्थानों पर उपलब्ध होनी चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर तुरंत उपयोग की जा सके।

प्राथमिक चिकित्सा पेटी का महत्व

- दुर्घटना या आपातकालीन स्थिति में तत्काल सहायता उपलब्ध कराती है।
- जीवन रक्षक उपायों को शीघ्र प्रारम्भ करने में सहायता करती है।
- चोट की गंभीरता एवं संक्रमण के जोखिम को कम करती है।
- पीड़ित को अस्पताल पहुँचने तक आवश्यक सुरक्षा एवं आराम प्रदान करती है।
- आपदा एवं संकट की परिस्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया देने में सहायक होती है।

एक आदर्श प्राथमिक चिकित्सा पेटी की विशेषताएँ

- मजबूत, साफ-सुथरी एवं टिकाऊ होनी चाहिए।
- जलरोधक (Waterproof) तथा धूलरोधी होनी चाहिए।
- उस पर लाल क्रॉस (+) अथवा फर्स्ट एड का स्पष्ट चिन्ह अंकित होना चाहिए।
- सभी सामग्री व्यवस्थित एवं आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए।
- आवश्यकता पड़ने पर तुरंत खोली एवं उपयोग की जा सके।
- घर, विद्यालय, कार्यालय एवं वाहनों में अलग-अलग फर्स्ट एड किट उपलब्ध होना लाभदायक है।

महत्वपूर्ण नियम (Important Rules)

- फर्स्ट एड किट का नियमित निरीक्षण (Regular Inspection) किया जाना चाहिए।
- एक्सपायर (Expired) हो चुकी दवाओं, एंटीसेप्टिक सामग्री एवं अन्य वस्तुओं को समय-समय पर बदलते रहना चाहिए।
- उपयोग के बाद समाप्त या प्रयुक्त सामग्री को तुरंत पुनः भरना (Replenishment) चाहिए।
- किट को सदैव स्वच्छ एवं सूखे स्थान पर रखना चाहिए।
- इसे बच्चों की पहुँच से दूर रखना चाहिए।
- साथ ही यह वयस्कों के लिए आसानी से उपलब्ध एवं सुलभ स्थान पर होनी चाहिए।
- किट को हमेशा बंद एवं सुरक्षित अवस्था में रखना चाहिए।
- प्राथमिक चिकित्सा पेटी को सामान्य घरेलू दवा पेटी (Medicine Box) के रूप में उपयोग नहीं करना चाहिए।
- इसका उपयोग केवल आपातकालीन प्राथमिक उपचार के लिए किया जाना चाहिए।

क्र.सं.	आवश्यक वस्तु (Item Name)	मुख्य उद्देश्य / उपयोग (Purpose)
1	गॉज़ स्वैब (Gauze Swabs)	घाव को ढकने, ड्रेसिंग करने तथा रक्तस्राव नियंत्रित करने के लिए
2	विभिन्न आकार की पट्टियाँ (Bandages)	ड्रेसिंग को स्थिर रखने एवं घायल अंग को सहारा देने के लिए
3	शोषक रूई (Absorbent Cotton)	घाव साफ करने एवं द्रव सोखने के लिए
4	बैंड-एड (Band-Aid)	छोटे कट, खरोंच एवं सतही घावों को ढकने के लिए
5	चिपकने वाला प्लास्टर(Adhesive Tape)	पट्टी एवं ड्रेसिंग को त्वचा पर स्थिर रखने के लिए
6	आँख का पैड(Eye Pad)	आँख की चोट को ढकने एवं सुरक्षा प्रदान करने के लिए
7	कैंची(Scissors)	पट्टी, गॉज़ एवं कपड़े काटने के लिए
8	चिमटी (Tweezers)	कांटे, काँच के टुकड़े या बाहरी कण निकालने के लिए
9	एंटीसेप्टिक घोल/मलहम(Antiseptic Solution/Ointment)	घाव को संक्रमण से बचाने एवं कीटाणु नष्ट करने के लिए
10	दर्द निवारक दवाएँ(Analgesics)	हल्के दर्द एवं बुखार में राहत प्रदान करने के लिए
11	क्रेप पट्टी (Crepe Bandage)	मोच एवं मांसपेशियों के खिंचाव में सहारा देने के लिए
12	दस्ताने (Gloves)	रक्त एवं शारीरिक द्रवों से सुरक्षा हेतु
13	फेस मास्क (Face Mask)	संक्रमण के प्रसार को कम करने के लिए
14	एप्रन (Apron)	कपड़ों एवं शरीर की सुरक्षा के लिए
15	सुरक्षा पिन (Safety Pins)	त्रिकोणीय पट्टी को स्थिर रखने के लिए
16	स्प्लिंट (Splints)	फ्रैक्चर वाले अंग को स्थिर रखने के लिए
17	टॉर्च (Flashlight)	अंधेरे में निरीक्षण एवं घाव देखने के लिए
18	थर्मामीटर (Thermometer)	शरीर का तापमान मापने के लिए
19	दर्द निवारक स्प्रे/क्रीम (Moov, Volini आदि)	मांसपेशियों के दर्द एवं मोच में राहत के लिए
20	टूर्निकेट (Tourniquet)	अत्यधिक एवं जानलेवा रक्तस्राव रोकने के लिए
21	ग्लूकोज / चीनी	कमजोरी अथवा निम्न रक्त शर्करा में ऊर्जा प्रदान करने के लिए
22	CPR फेस शील्ड / पॉकेट मास्क	कृत्रिम श्वसन देते समय संक्रमण से सुरक्षा हेतु
23	हैंड सैनिटाइज़र	हाथों को संक्रमण मुक्त रखने के लिए
24	सेलाइन सोल्यूशन / स्वच्छ जल	आँख एवं घाव साफ करने के लिए
25	बर्न ड्रेसिंग (Burn Dressing)	जलने की स्थिति में प्राथमिक उपचार हेतु
26	आपातकालीन संपर्क सूची	एम्बुलेंस, अस्पताल एवं अन्य सेवाओं से शीघ्र संपर्क हेतु
27	प्राथमिक चिकित्सा मार्गदर्शिका(First Aid Manual)	आपातकालीन परिस्थितियों में सही निर्देश प्राप्त करने हेतु

आपातकालीन नंबरों का महत्व

- किसी भी दुर्घटना या आपदा की स्थिति में सबसे पहले सहायता बुलाना आवश्यक होता है।
- विद्यालय, कार्यालय, उद्योग एवं सार्वजनिक संस्थानों में इन नंबरों की सूची स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होनी चाहिए।
- प्राथमिक चिकित्सा प्रदान करने के साथ-साथ उचित आपातकालीन सहायता बुलाना भी फर्स्ट एडर का दायित्व है।
- गंभीर दुर्घटनाओं में "पहले सहायता बुलाएँ, फिर प्राथमिक उपचार दें" (Call First Principle) का पालन करना चाहिए।
- आपातकालीन सेवाओं को फोन करते समय निम्न जानकारी स्पष्ट रूप से दें-
  1. दुर्घटना का स्थान
  2. पीड़ितों की संख्या
  3. चोट या समस्या का प्रकार
  4. अपना नाम एवं संपर्क नंबर

महत्त्वपूर्ण आपातकालीन नंबर

क्र.सं	विभाग / हेल्पलाइन	संपर्क नंबर
1	एकीकृत राष्ट्रीय आपातकालीन सेवा)	112
2	पुलिस सहायता	100
3	अग्निशमन सेवा (Fire Brigade)	101
4	एम्बुलेंस सेवा	102
5	राष्ट्रीय आपातकालीन स्वास्थ्य सेवा	108
6	महिला हेल्पलाइन	181
7	चाइल्ड हेल्पलाइन (CHILDLINE)	1098
8	राष्ट्रीय राजमार्ग आपात सहायता	1033
9	आपदा प्रबंधन सहायता	108 / 112
10	रेलवे सुरक्षा हेल्पलाइन	139
11	मानसिक स्वास्थ्य सहायता (Tele-MANAS)	14416 अथवा 1-800-891-4416
12	राष्ट्रीय स्वास्थ्य हेल्पलाइन	104
13	रक्तदान संबंधी सहायता (क्षेत्रानुसार)	स्थानीय रेड क्रॉस / ब्लड बैंक
14	अंगदान हेल्पलाइन (ORBO-AIIMS)	1060

अभ्यास प्रश्न

1. अभिकथन (A): प्राथमिक चिकित्सा का एक प्रमुख उद्देश्य पीड़ित की स्थिति को और अधिक बिगड़ने से रोकना है।
कारण (R): प्राथमिक चिकित्सा केवल अस्पताल में चिकित्सक द्वारा प्रदान की जाती है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए–
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(b) A और R दोनों सही हैं परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सही है परन्तु R गलत है।
(d) A गलत है परन्तु R सही है। **[c]**

2. अभिकथन (A): गुड समैरिटन को दुर्घटना पीड़ित की सहायता करने पर अनावश्यक पुलिस उत्पीड़न से संरक्षण प्राप्त है।
कारण (R): सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देश सहायता करने वाले नागरिकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए–
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(b) A और R दोनों सही हैं परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सही है परन्तु R गलत है।
(d) A गलत है परन्तु R सही है। **[a]**

3. अभिकथन (A): बेहोश व्यक्ति को पानी या कोई पेय पदार्थ देना उचित प्राथमिक चिकित्सा है।
कारण (R): बेहोश व्यक्ति में निगलने की क्रिया प्रभावित हो सकती है जिससे दम घुटने का खतरा रहता है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए–
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(b) A और R दोनों सही हैं परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सही है परन्तु R गलत है।
(d) A गलत है परन्तु R सही है। **[d]**

4. अभिकथन (A): सीपीआर देते समय पसली टूट जाना हमेशा लापरवाही का प्रमाण माना जाता है।
कारण (R): न्यायालय यह भी देखता है कि जीवन बचाने के लिए उचित कौशल और सद्भावना से कार्य किया गया था या नहीं।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए–
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(b) A और R दोनों सही हैं परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सही है परन्तु R गलत है।
(d) A गलत है परन्तु R सही है। **[d]**

5. अभिकथन (A): आपातकाल में बेहोश पीड़ित के लिए निहित सहमति (Implied Consent) लागू मानी जाती है।
कारण (R): ऐसी स्थिति में यह माना जाता है कि यदि व्यक्ति सचेत होता तो जीवन रक्षक सहायता स्वीकार करता।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए–
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(b) A और R दोनों सही हैं परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सही है परन्तु R गलत है।
(d) A गलत है परन्तु R सही है। **[a]**

6. अभिकथन (A): प्राथमिक चिकित्सा प्रदाता को अपनी सुरक्षा की उपेक्षा करके हर परिस्थिति में बचाव कार्य करना चाहिए।
कारण (R): यदि प्रदाता स्वयं घायल हो जाए तो वह प्रभावी सहायता प्रदान नहीं कर पाएगा।
उपरोक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए–
(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(b) A और R दोनों सही हैं परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सही है परन्तु R गलत है।
(d) A गलत है परन्तु R सही है। **[d]**

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. प्राथमिक चिकित्सा का उद्देश्य जीवन की रक्षा करना है।
2. प्राथमिक चिकित्सा केवल प्रशिक्षित डॉक्टर ही दे सकते हैं।
3. प्राथमिक चिकित्सा पीड़ित की स्थिति को बिगड़ने से रोकती है।
4. प्राथमिक चिकित्सा अस्पताल पहुंचने से पहले भी दी जा सकती है।
सही उत्तर चुनिए–
(a) केवल 1, 2 और 3 (b) केवल 1, 3 और 4
(c) केवल 2 और 4 (d) केवल 1 और 2 **[b]**

8. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. गुड समैरिटन को गवाह बनने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।
2. पुलिस उसकी पहचान सार्वजनिक करने के लिए बाध्य कर सकती है।
3. सहायता करने वाले नागरिक को विधिक संरक्षण प्राप्त है।
4. सर्वोच्च न्यायालय ने इस संबंध में दिशा-निर्देश जारी किए हैं।
सही उत्तर चुनिए–
(a) केवल 1, 3 और 4 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 2 (d) केवल 2, 3 और 4 **[a]**

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. टूर्निकेट का उपयोग अत्यधिक रक्तस्राव रोकने में किया जाता है।
2. क्रेप पट्टी का उपयोग मोच में किया जाता है।
3. एंटीसेप्टिक लोशन का उपयोग संक्रमण रोकने हेतु किया जाता है।
4. पैरासिटामोल का उपयोग फ्रैक्चर को स्थिर करने हेतु किया जाता है।
सही उत्तर चुनिए–
(a) केवल 1 और 4 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1, 2 और 3 (d) केवल 1, 3 और 4 **[c]**

10. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
1. सचेत व्यक्ति उपचार अस्वीकार कर सकता है।
2. उपचार अस्वीकार करने पर भी उसे जबरन चिकित्सा देना उचित है।
3. प्रदाता को पेशेवर सहायता बुलानी चाहिए।
4. पीड़ित के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए।
सही उत्तर चुनिए–
(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 1, 3 और 4
(c) केवल 2, 3 और 4 (d) केवल 1 और 4 **[b]**

♦♦♦♦

विज्ञापन
लक्ष्य क्लासेज उदयपुर
मुश्किल परीक्षाएँ भी आसान लगेगी
जब तैयारी होगी लक्ष्य क्लासेस के साथ
CET
12th &
Graduation level
9:41
Lakshya Classes Udaipur
Lakshya classes
In-app purchases
Uninstall
Open
About this app
E – Learning Education for Exams:
REET MAIN, CET RAS, RPSC, RSMSSB Etc.
Education
Study guides
4.6★
9K reviews
3+
Rated for 3+
1M+
Downloads
LAKSHYA CLASSES APP
AFFORDABLE
Quality Education
RECORDED ONLINE COURSES
TEST SERIES
Practice & Improve
Data safety
राजस्थान की अनुभवी टीम, अब एक ही प्लेटफार्म पर
OFFLINE & ONLINE LIVE FROM CLASSROOM
AND RECORDED COURSE
Anil Choudhary Sir
Math And Reasoning
Rahul Sir
Science
Ratan Sir
Rajasthan History
S.K. Sir
Rajasthan Geography
Nagvinder Sir
Indian & Rajasthan Polity
Pankaj Sir
Art & Culture
Mukesh Sir
हिन्दी
SIKSHA MANDIR
लक्ष्य क्लासेज
Scan to Download
Lakshya App Now
Google play
MRP : ₹ 320
व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध
क्यों हैं लक्ष्य क्लासेज विशेष?
व्यापक अध्ययन सामग्री
MCQ की बुकलेट
नियमित टेस्ट सीरीज
पूर्णत: समर्पित यूट्यूब चैनल
मासिक करंट अफेयर्स मैगज़ीन
लाइब्रेरी सुविधा
ऑनलाइन एप्लीकेशन एक्सेस
अनुभवी एवं योग्य फैकल्टी
सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम
नियमित काउंसलिंग
S.No.AP0134 CODE : APDO(35) NRT
सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™
M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur